ला इल्मी के बाइस चन्दे की बाबत होने वाले गुनाहों की तरफ निशान देही करने वाली किताब

Chande Ke Baare Mein Suwal Jawab (Hindi)



चन्दे के बारे में सुवाल जवाब

बा'ज़ उन मसाइल का बयान जिन का जानना मस्जिवों, मद्रसों और मज़हबी व समाजी इदारों के चन्दा कुनिन्दगान के लिये फ़र्ज़ है।

अनः रेखे तर्गक्त अमी अस्ते मुनतः, वानि व ध्वे इस्तामी, हनते अस्तामा मीनाना अन् विनात सुहुत्स्माद इत्यास अत्तार क्वादिशी १-जुवी अभिन्य

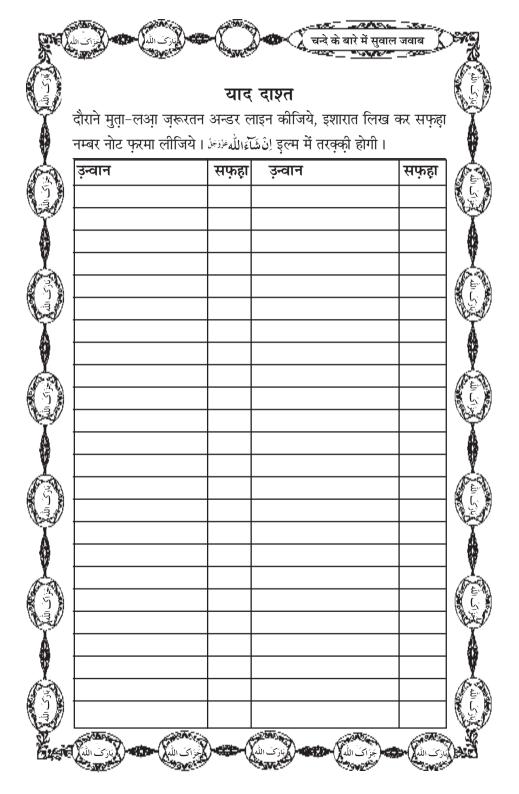
मस्जिद् की इप्रतारी का मस्अला महरो में मेहमानों की खातिर तवाजीअ समाजी इन्हें के अस्पताल में जुकात..... चन्देकाने वालों की ताथियात का तृतीकृत मस्जिदाय महस्ता की अध्या जुता जुता रखने के म-दनी फूल गु-रखा को खालें लेने दीजिये

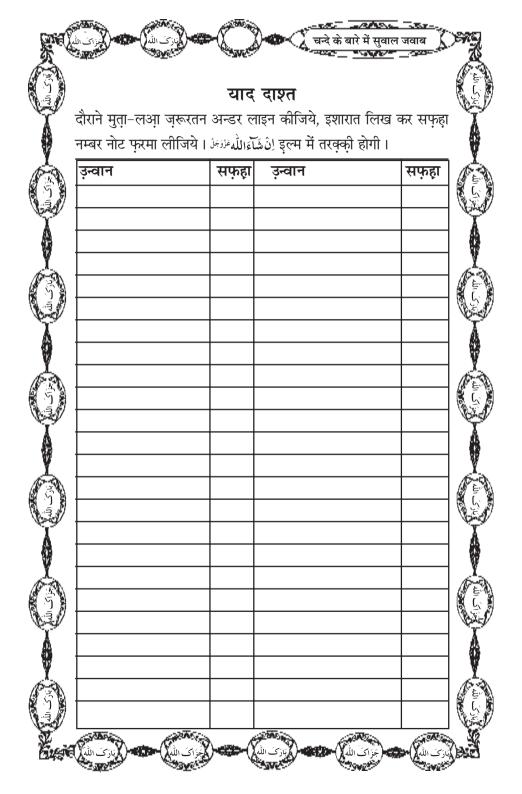
म-दनी काफ़िला और मेहमानी की खैर ख़्वाही

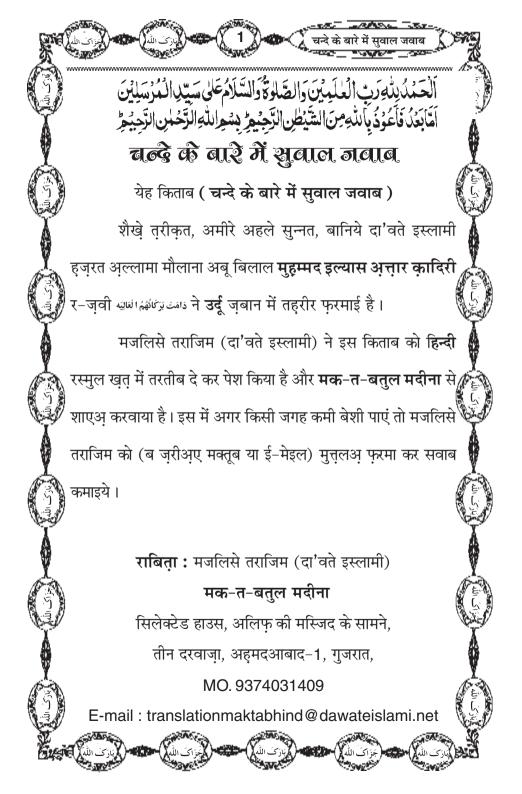
फाकाश्यनसिक्षेपक त बहुल्यवीना (चिक्रह्मानी) सक-त-बहुलस्वीना

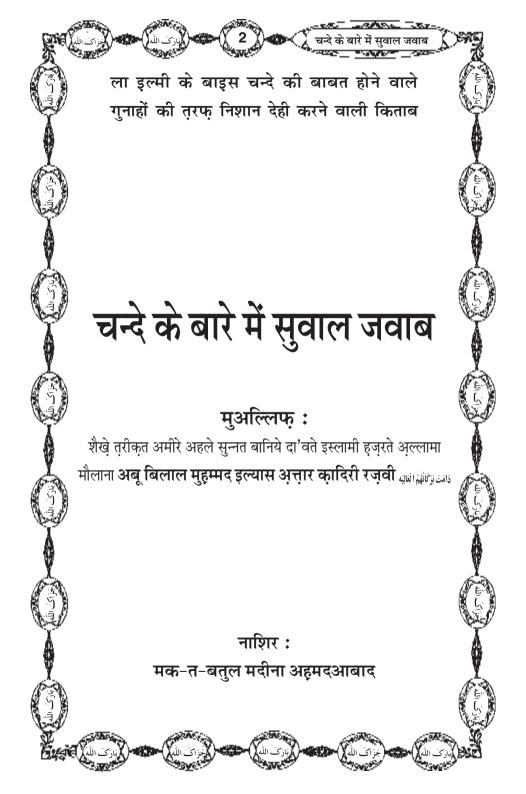
सिलेक्टेड हाउस, अलिफ् की मस्जिद के सामने, तीन दरवाजा अहमदआबाद-1. गुजरात, इन्डिया Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabahind@gmail.com www.dawateislami.net



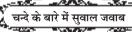












फ़ेहरिश

	उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़्ह़ा	
-die	चन्दे की शर-ई हैसिय्यत	10	तावान अदा करने का त़रीका	33	
	चन्दा पार्टी केह कर मज़ाक़ उड़ाना कैसा	11	चन्दे की रक्म गुम हो गई तो ?	35	
	बद तरीन सूद मुसल्मान की आबरू रेज़ी	12	चन्दे के ग़लत़ इस्ते 'माल में तावान की सूरतें	36	
	मुसल्मान की आबरू उस के माल से अहम है	12	ज़कात ग़ैरे मस्रफ़ में ख़र्च कर दी, उस का हल ?	38	
	मोमिन की हुर्मत का 'बे से बढ़ कर है	13	तावान की रक्म न हो तो?	38	
	यहूदो नसारा की बद ख़स्लतें	14	अगर किसी सिय्यद पर तावान चढ़ गया हो तो?	40	
	क्या सरकार ने भी कभी चन्दा किया है	14	फ़ित्रा गैरे मस्रफ़ में ख़र्च कर डाला अब क्या करें ?	40	
A DAME	उ़स्माने गृनी ने कितना चन्दा पेश किया ?	16	हर फ़र्द मसाइल नहीं जानता, इस का हल ?	41	
	चन्दा करने से रोकना कैसा ?	17	चन्दा करने वालों की तरबिय्यत का त़रीका	42	
	क्या हर चन्दे को वक्फ़ का पैसा बोल सकते हैं ?	18	चन्दा ज़ाती एकाउन्ट में जम्अ़ करवाना कैसा ?	43	
	कुफ्फ़ार से चन्दा मांगना कैसा ?	19	माले गुसब की ता 'रीफ़	45	
	मस्जिद के चन्दे से नियाज़ करना कैसा ?	20	सूद से मस्जिद के इस्तिन्जाखाने बनाना कैसा ?	45	
λ.	मस्जिद के चन्दे से चरागां	20	सूद के पैसों से हज	47	
	इजितमाअ़ का चन्दा बच गया तो क्या करे ?	21	लरजा ख़ैज़ हिकायत	47	
/	कई अफ़राद से लिया हुवा चन्दा बच जाए तो क्या करे ?	22	हराम माल से हज करने वाले की शामत	48	
	12 अफ़राद से लिया हुवा चन्दा बच गया तो?	23	 सूद न लें तो बेन्क वाले ग़लत़ इस्ते 'माल कर सकते हैं !	49	
λ	मस्जिद की इफ़्त़ारी का मस्अला	24	खून की नहर	49	
	मस्जिद की बची हुई इफ्तारी का क्या करे ?	26	गोया मां के साथ ज़िना	50	
/	मस्जिद के चन्दे के मसारिफ़	26	पेट में सांप	50	
1000	चन्दे की रक्म ज़ाती काम में ख़र्च डाली तो ?	29	मद्रसे में मेहमानों की ख़ातिर तवाज़ोअ़	51	
	मस्जिद का चन्दा उधार दे दिया तो ?	32	ग़ैरे मुस्तिहक़ ने मद्रसे का खाना खा लिया तो ?	52	
	अमानत रखे हुए चन्दे को उधार लेना कैसा ?	33	मस्अला मा 'लूम न हो और खा लिया तो ?	52	
,			Marion		

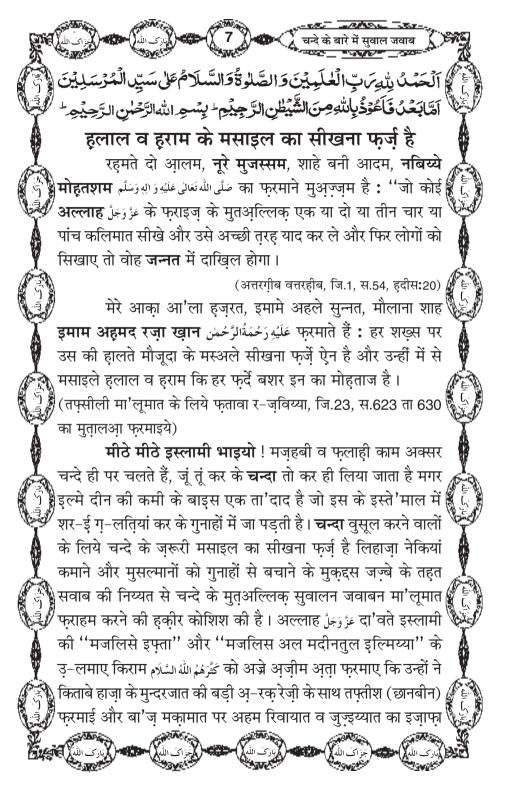
चन्दे के बारे में सुवाल जवाब के क्रिक्ट में सुवाल जवाब					
ار ازی ا	ुन्वान इन्वान	- <u>अ</u> क्षर-	<u>उ</u> न्वान	 सफ़्हा	ری اللہ
T	गैरे ह़क़दार को खाना न देना वाजिब है	53	हीला करने का आसान त़रीका	70	T
	मद्रसे में बाहर से बहुत सारा खाना आ जाए तो क्या करें ?	54	फ़कीर के वकील से क्या मुराद है ?	71	
<u>Y</u>	मद्रसे का खाना बच जाए तो?	55	वकील ज़कात पर कृब्ज़ा करने के बा 'द ख़र्च कर सकता है?	71	▼
3	मद्रसे के मृत्वख़ से खाना पकाना	55	वकील का कृब्ज़ा मुविक्कल ही का कृब्ज़ा केहलाएगा	71	
	का़फ़िले वालों का फ़िनाए मस्जिद में खाना पकाना	56	हीला करते वक्त कहा :''रख मत लेना''तो ?	72	
A	मद्रसे का खाना बाहर वाला खाए या नहीं ?	56	क्या चेक के ज़रीए हीला हो सकता है ?	72	A
Y	मद्रसे के कम्बल दूसरा कोई इस्ते 'माल कर सकता है या नहीं ?	57	बहुत बड़ी रकम का हीला कैसे हो !	73	Y Y
S S	मस्जिद के कूलर का ठंडा पानी घर ले जाना	57	 हीले की रकम दीनी कामों में	73	ν. (.) (.)
	मस्जिद का सादा पानी भर कर ले जाना	58	क्या हीले की रक्म से तोहफ़ा	74	
A	मद्रसा अगर बड़ी इमारत में हो तो पानी का हुक्म	58	सिंच्यद को हीले की रकम देना कैसा ?	76	A
Y	मस्जिद की अश्या मद्रसे में इस्ते 'माल	59	सच्चिद के साथ भलाई करने का अ़ज़ीम सिला	77	y y
	मस्जिद व मद्रसे की अश्या जुदा जुदा रखने के म-दनी फूल	60	सच्यिद से भलाई करने वाले को		
	मद्रसे की किताबों पर अपना नाम वग़ैरा लिखना कैसा ?	61	आका की ज़ियारत होगी	78	
A	मद्रसे का डेस्क तोड़ डाला तो ?	61	कम मालदार के लिये सच्चिद की ख़िदमत का त़रीका	78	A A
Y	मद्रसे के डेस्क वगै़रा पर कुछ लिखना	61	हीले के बा 'द रकम लौटाने के मोहतात अल्फाज़	79	Y
	इज़ाले का त़रीक़ा	62	ज़कात के वकील के लिये मोहतात अल्फ़ाज़	79	
The sale	चन्दे के कुल्ली इंख्तियारात के मस्अले	62	कुफ्फ़ार की इम्दाद करना कैसा ?	80	
Å	कुल्ली इख़्तियार के मोहतात अल्फ़ाज़	63	समाजी इदारे के अस्पताल में ज़कात	81	À
¥	हीले के शर-ई दलाइल	64	फ़लाह़ी इदारों के लिये ज़कात के इस्ते 'माल	81	Y
	कान छेदने का रवाज कब से हुवा ?	66	गैर मुस्लिम को माले वक्फ़ से देना जाइज़ नहीं	82	
	गाय के गोश्त का तोह़फ़ा	67	चन्दा कारोबार में लगाना कैसा ?	83	
A	ज़कात का शर-ई हीला	67	चन्दे की रक्म से इजितमाई कुरबानी के लिये गायें ख़रीदना	84	Ā
*	100 अफ़राद को बराबर बराबर सवाल मिले	68	कुरबानी की खालें स्कूल की	84	₩
PEN	फ़क़ीर की ता 'रीफ़	69	गुरबा को खालें लेने दीजिये	85	
	मिस्कीन की ता 'रीफ़	70	खालों के लिये बे जा ज़िद मत कीजिये	86	

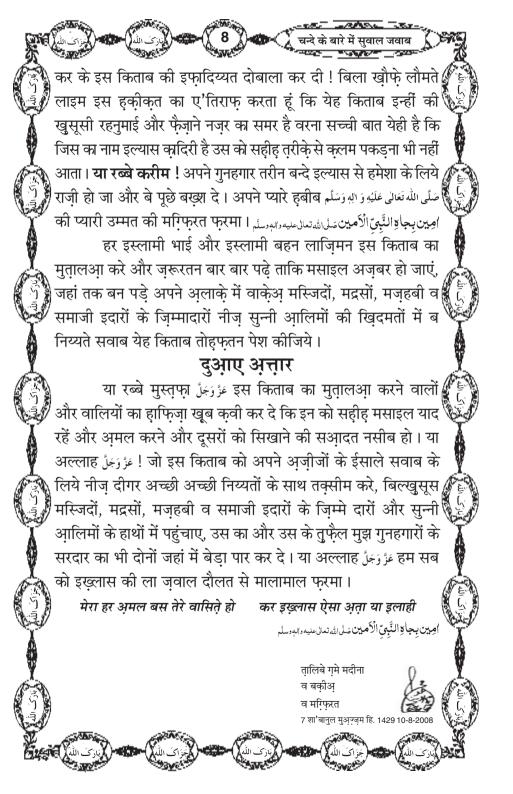
	موراک الله موراک الله	ر بازگ الله پیرون	6	चन्दे के बारे में सुवाल जव	ह्य - ाब ∫
7-1-10	V VII		7777	·	

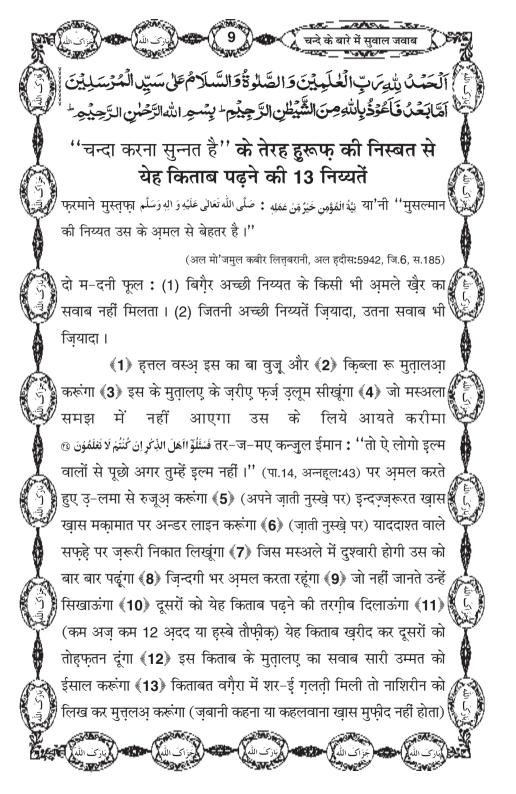
>>>>	उन्वान	सफ़्ह्रा	उन्वान	सफहा	4
>>>>	सुन्नी मदारिस की खालें मत काटिये	86	म-दनी काफ़िले के लिये मिली हुई रकम दूसरे दीनी कामों में?	96	1
	सुन्नी मद्रसे को खाल खुद दे आइये	87	मालदारों को चन्दे से इजितमाअ़ में ले जाना कैसा ?	96	
	अपनी कुरबानी की खाल बेच दी तो ?	88	वक्फ़ के माल के ग़लत़ इस्ते माल का अ़ज़ाब	98	
	म-दनी का़फ़िले के अख़ाजात के बारे में		म-दनी काफ़िला या सालाना इजितमाअ़ के लिये सुवाल	98	6
	सुवाल जवाब	89	इजितमाअ़ की खुसूसी ट्रेन के लिये 5 म-दनी फूल	100	1
	का़फ़िले में सब यक्सां रक़म जम्अ़ करवाएं	90	क्या दुन्यवी कानून पर अ़मल करना ज़रूरी है ?	102	
,	मगर खुराक सब की यक्सां नहीं होती?	90	जमान जब्तृ कर लेना कैसा ?	103	
	म-दनी कृफ़िला और महमानों की ख़ैरख़्वाही	91	दो तरफ़ा किराए की गाड़ी के लिये एहतियातें	103	4
	इख़्तितामे का़फ़िला पर बची हुई रक़म	92	तै शुदा से ज़ाइद सुवारी बिठाना	105	1
	दूसरे के ख़र्च पर सफ़र किया, रक़म बच	92	ट्रेन में भी तै शुदा सुवारियां ही बिठाइये	106	
	आधी ज़िन्दगी, आधी अ़क्ल और आधा इल्म !	93	समाजी इदारे अ़त्वियात दीनी कामों में	107	
1	गरीबों के लिये रक्म मिली, मालदारों पर खुर्च	94			4

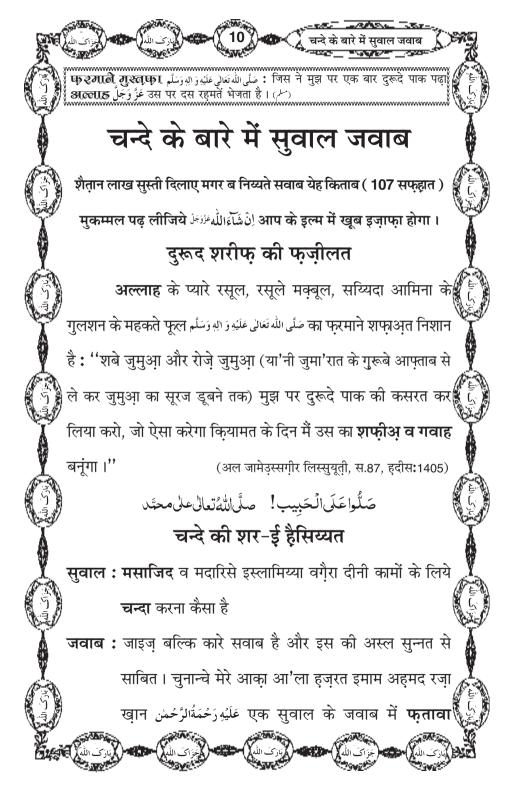
बेड रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीनिये

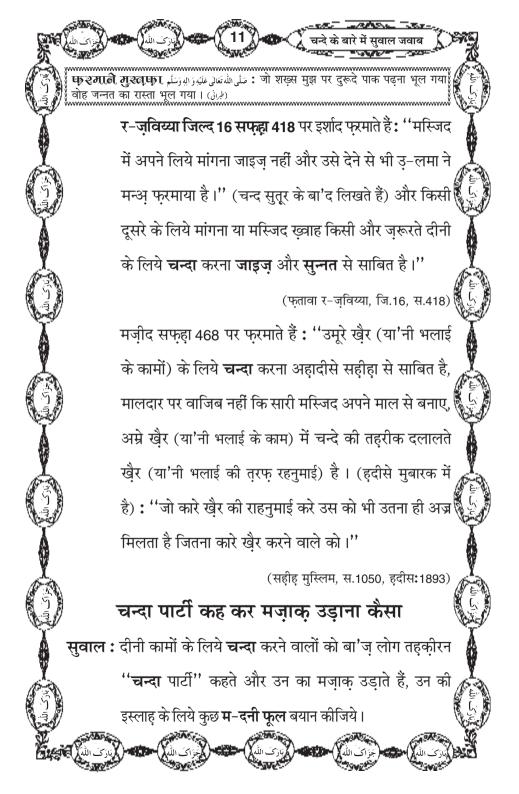
शादी ग्मी की तक्रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वगैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाएअ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तिमल पेम्फ्लेट तक्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ्लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और खूब सवाब कमाइये।

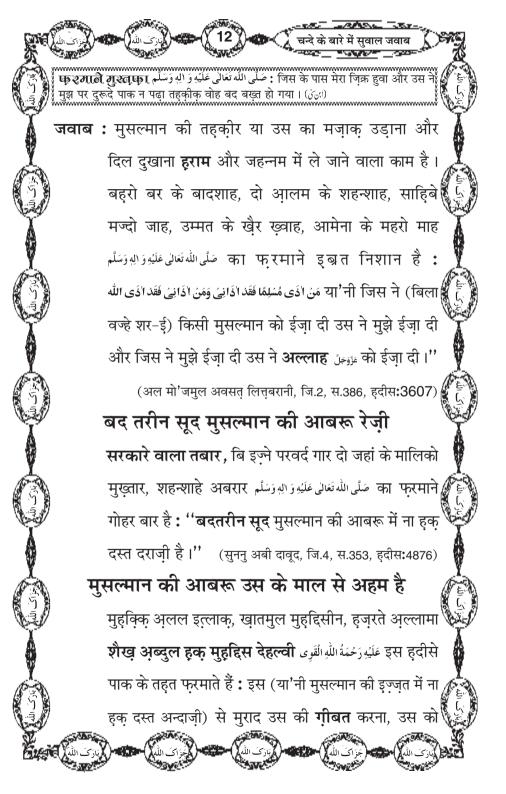


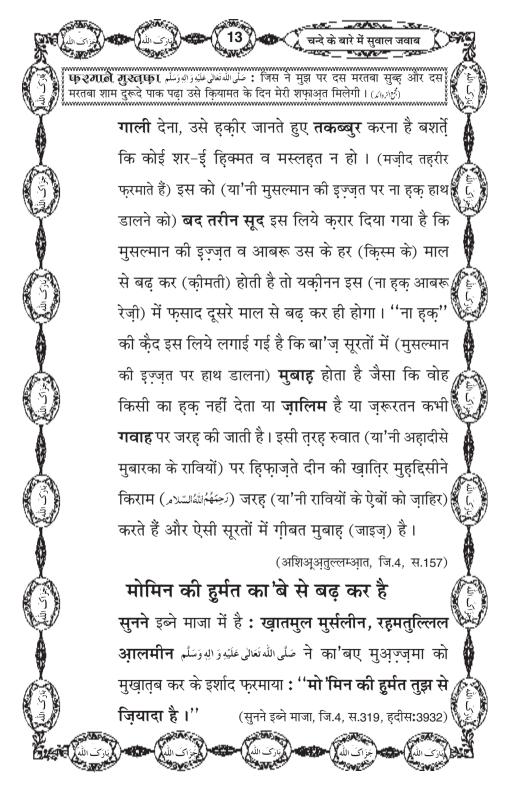


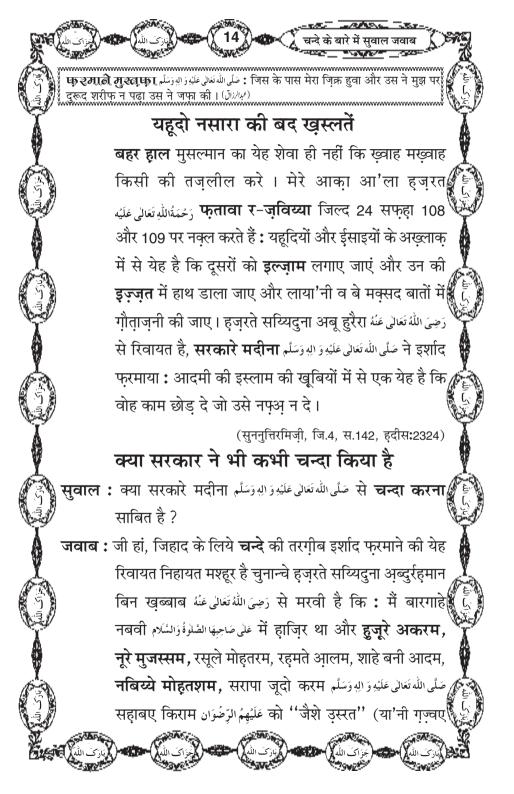


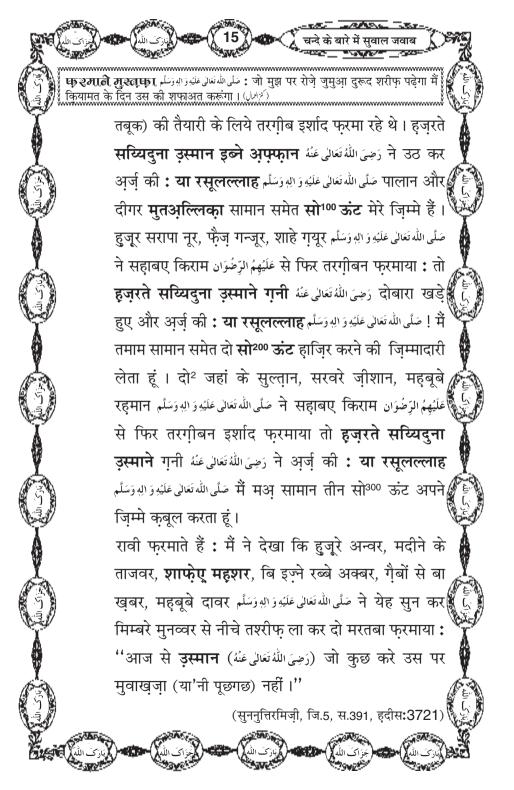


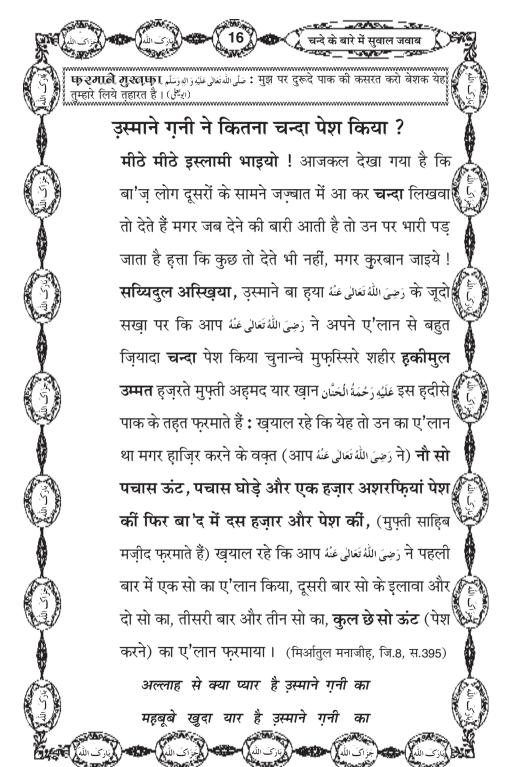


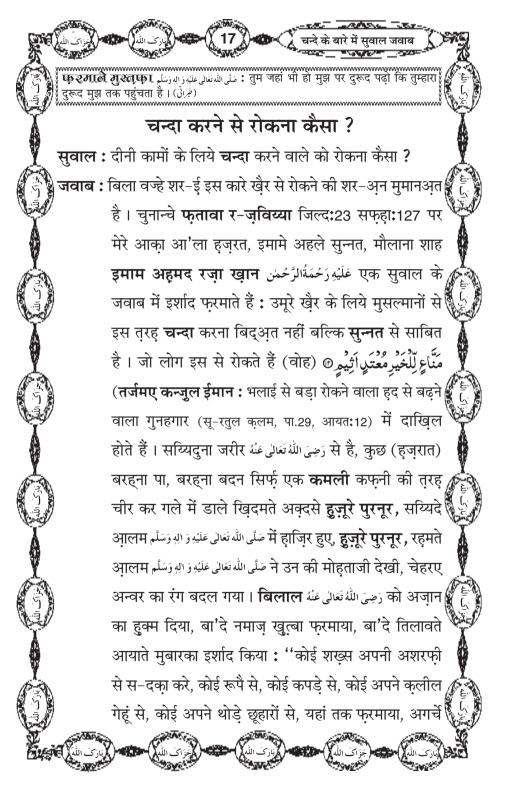


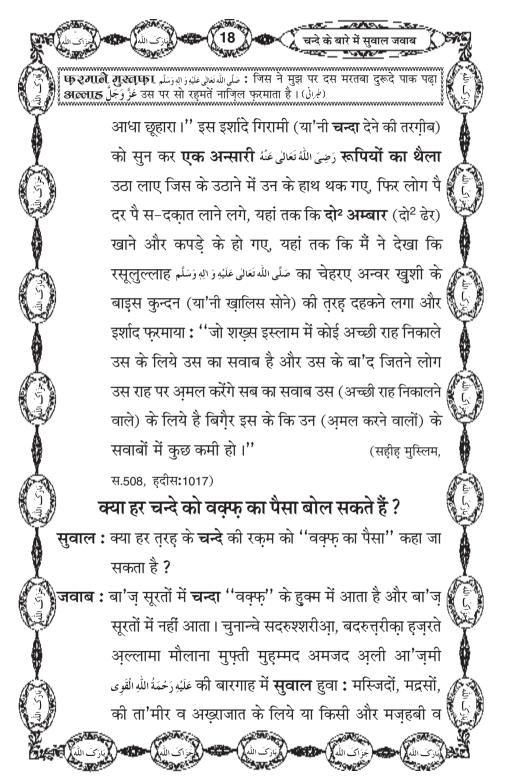


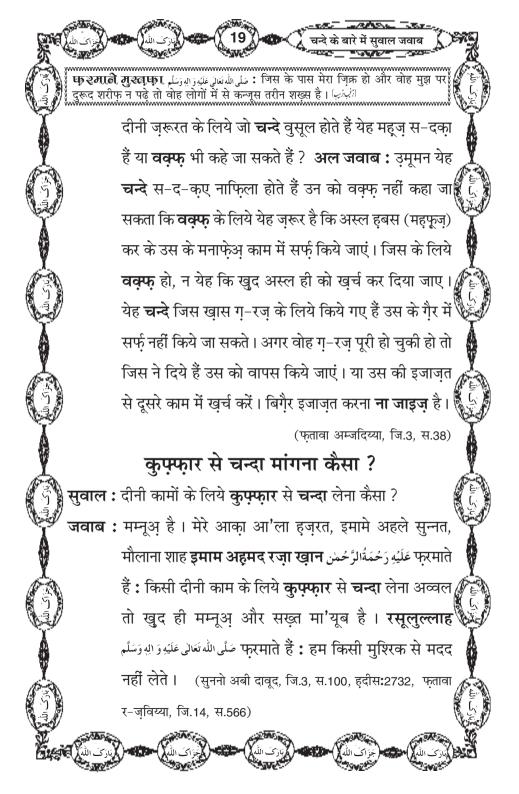


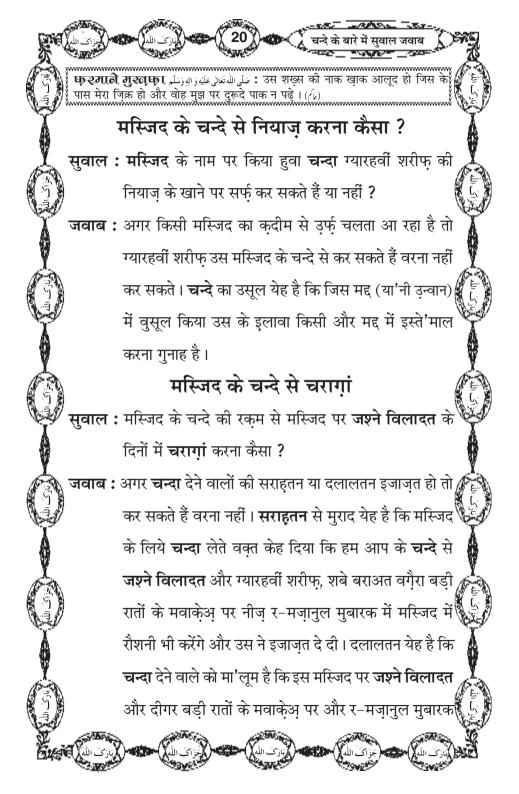


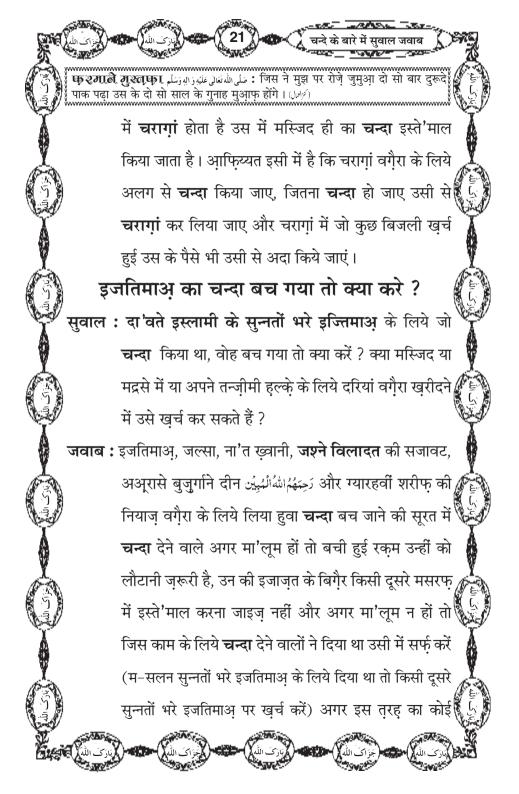


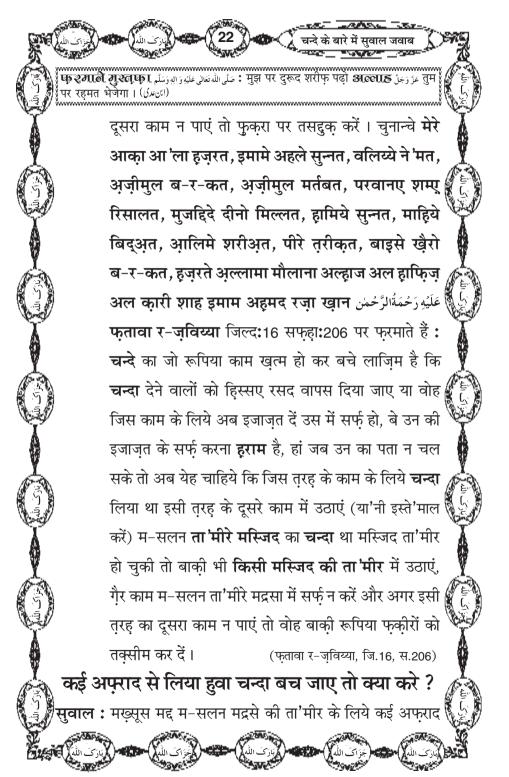


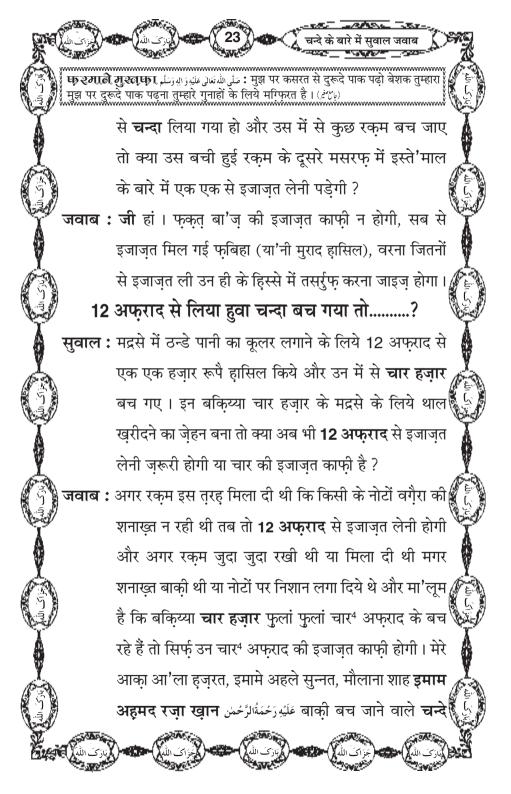


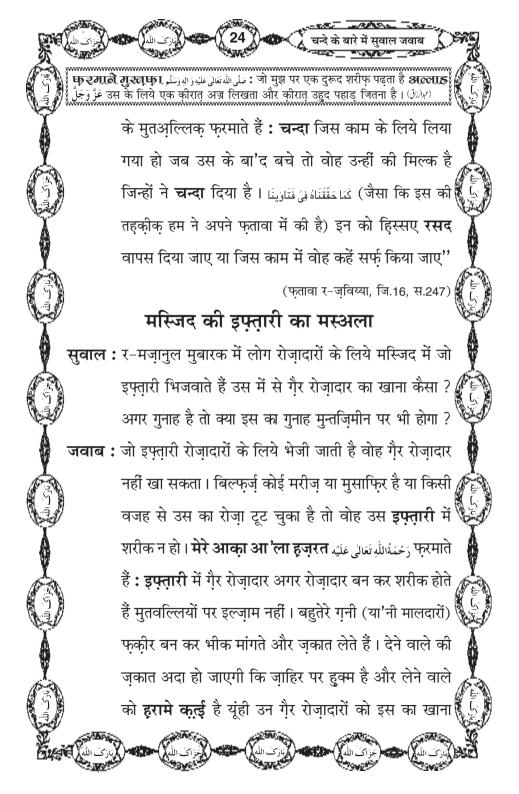


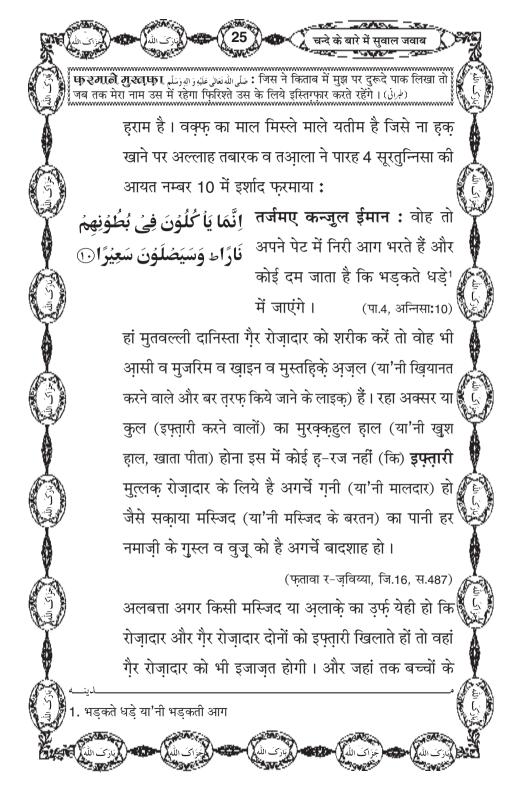


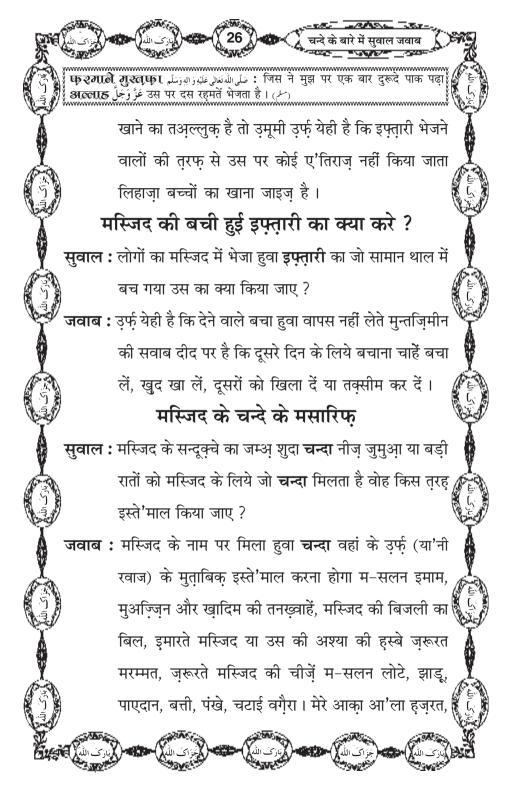






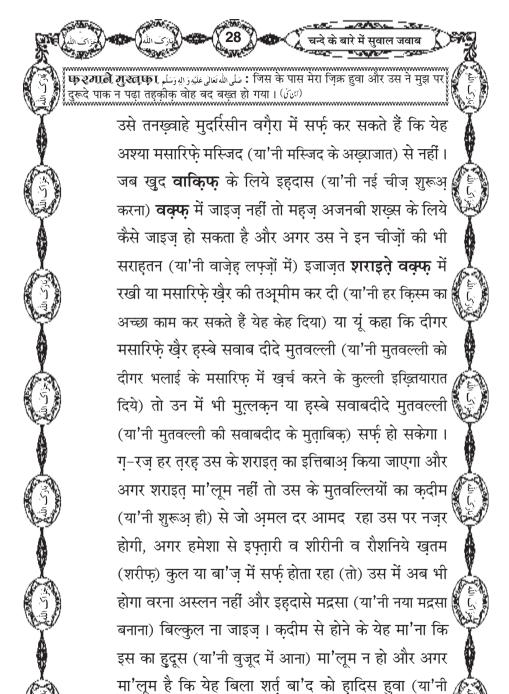




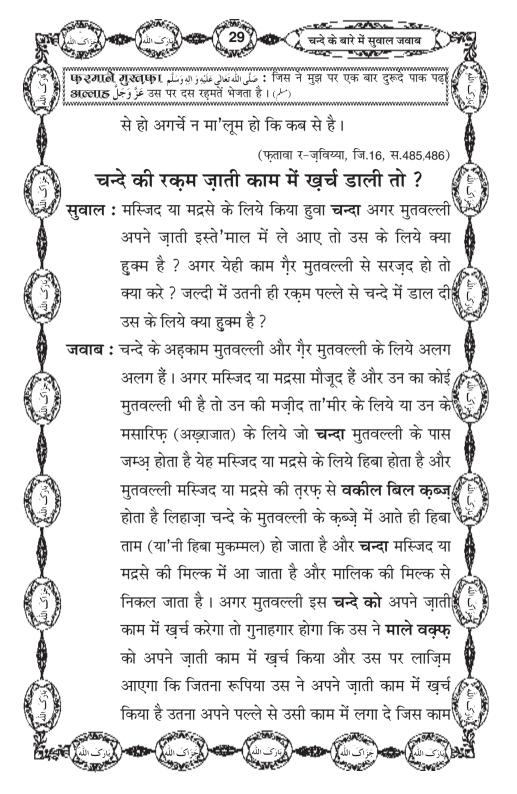


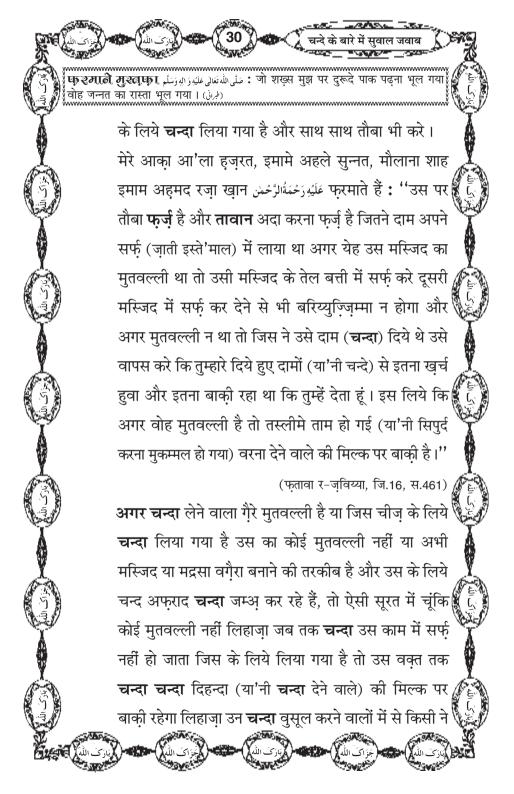
फ़्टमाड़ी मुख्यफ़ा مَنْ اللَّهُ عَلَيْهِ وَالِهِ وَسَلَّم आके **मुझ** पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया إ वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (طِرْنَ)

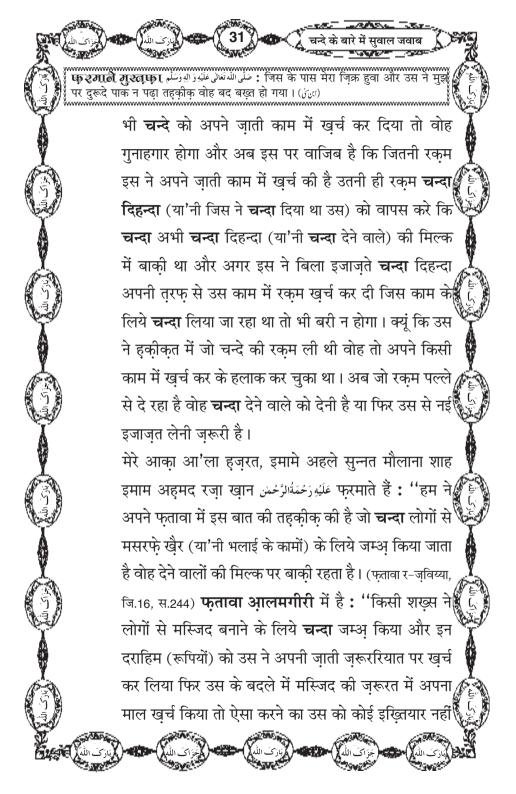
> इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रजा खान के एक मबारक फत्वे का इक्तिबास गौर से عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحُمَانِ सीखने को मिलेगा। चुनान्चे फरमाते हैं: यहां हक्मे शर-ई येह है कि अवकाफ (या'नी वक्फ की हुई चीजों) में पहली नजर शर्ते वाकि़फ़ (या'नी वक़्फ़ करने वाले की शर्त़) पर है (कि) येह ज़मीन व दुकानें उस ने जिस ग्-रज़ के लिये मस्जिद पर वक्फ़्री की हों उन में सर्फ किया जाएगा अगर्चे वोह इफ्तारी व शीरीनी व रौशनिये खुतम (शरीफ़) हो और उस के सिवा दूसरी ग्-रज् में उस का सर्फ़ करना **हराम हराम और सख़्त हराम** अगर्चे वोह बिनाए मद्रसए दीनिया हो । वाकि़फ़ की शर्त ऐसे ही वाजिबुल अमल है जैसे शारेअ़ की नस (या'नी कुरआन व हदीस का हुक्म)। (दुर्रे मुख्तार, जि.६, स.६६४) हत्ता कि अगर उस ने सिर्फ ता'मीरे मस्जिद के लिये (रक्म) वक्फ़ की तो मरम्मते शिकस्त व रीखत (या'नी टूट फूट की मरम्मत) के सिवा मस्जिद के लोटे चटाई में भी सर्फ नहीं कर सकते (और) इफ्तारी वगैरा (तो) दर किनार, और अगर मस्जिद के मसारिफे राएजा फिल मसाजिद (या'नी मस्जिदों में जिन चीजों में खर्च करने का उर्फ हो उन) के लिये **वक्फ़** है तो ब क्-दरे मअहूद (या'नी उर्फ़ की मिक्दार में) शीरीनी व रौशनिये खुतम (शरीफ़) में सर्फ़ (या'नी 🛭 ख़र्च करना) जाइज़ (मगर) इफ़्त़ारी व मद्रसे में **ना जाइज़,** न

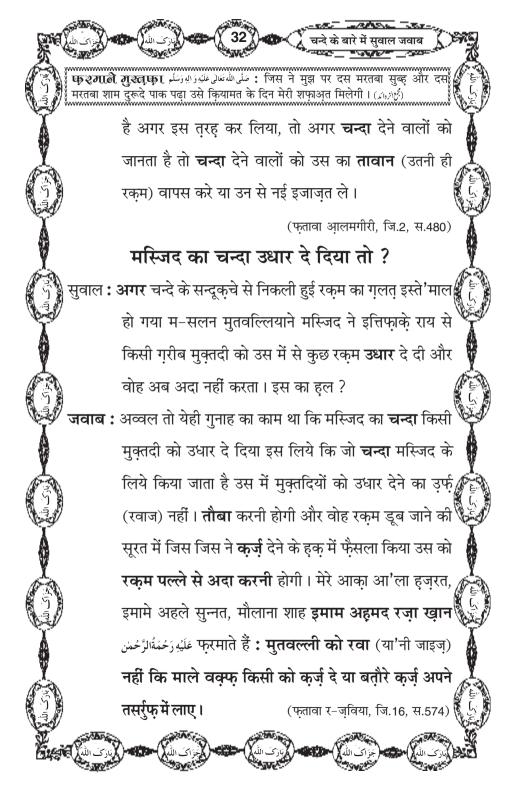


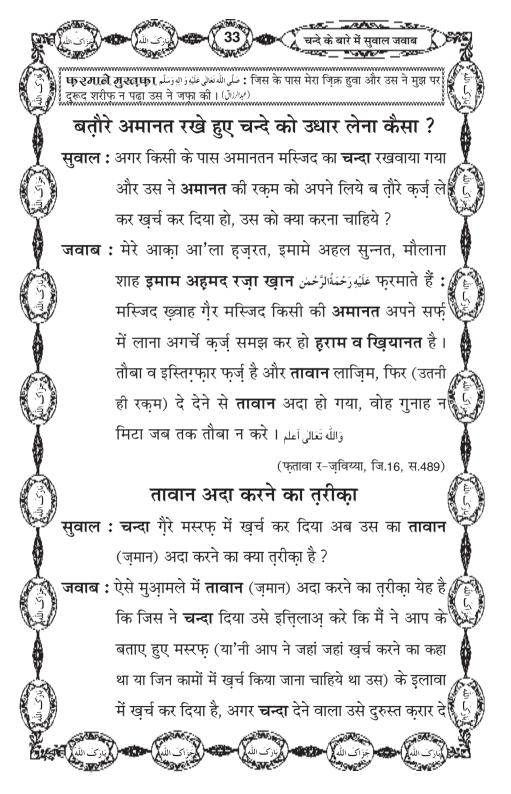


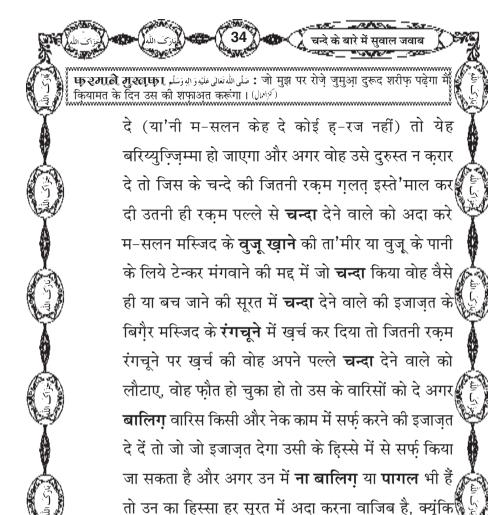








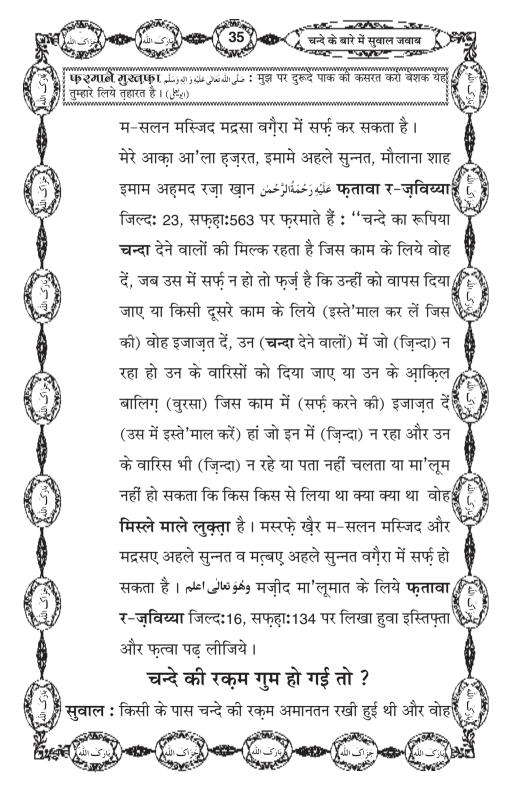


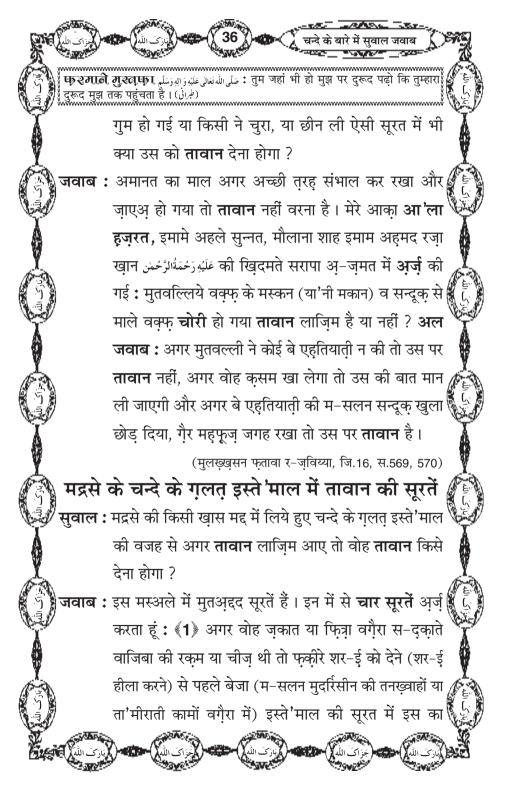


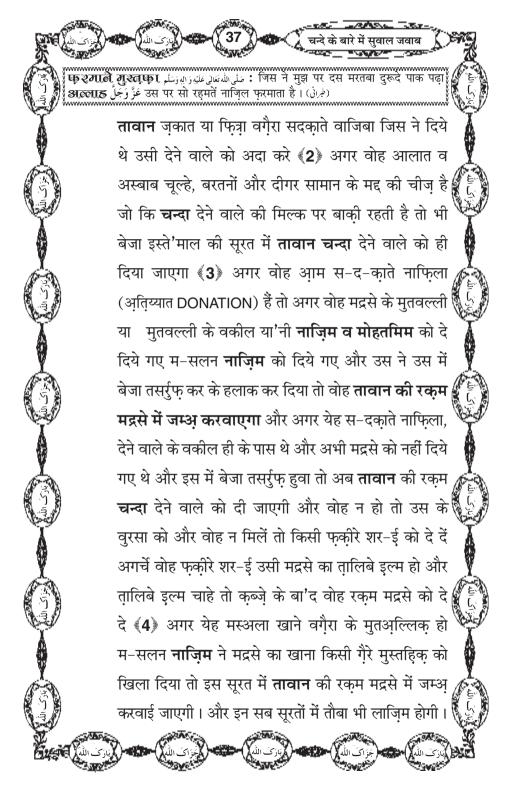
ता उन का हिस्सा हर सूरत में अदा करना वाजिष है, क्यू कर वोह इजाज़त देने के शर-अ़न अहल नहीं। अगर **चन्दा** देने वाले का कोई वारिस न हो या किसी त्रह **चन्दा** देने वाले का पता न लगे तो अब **चन्दा** जिस मद्द में (या'नी जिस काम के लिये) लिया था उसी त्रह के काम में तावान वाली रक़म

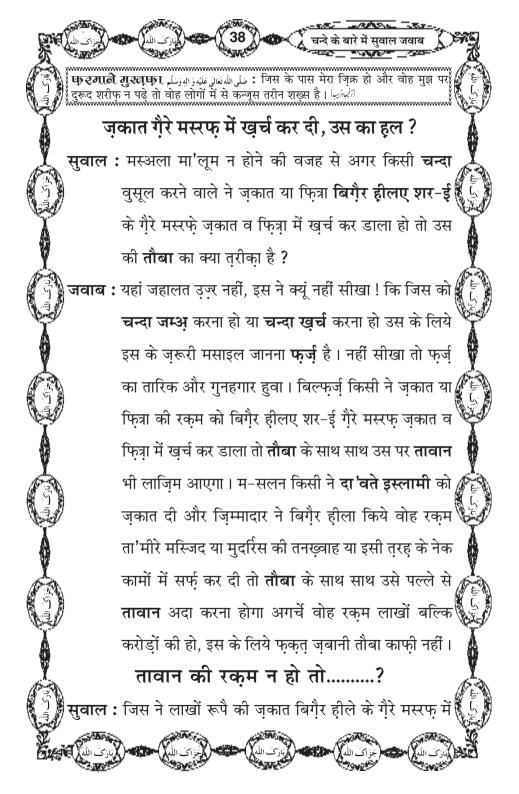
के माल (या'नी गिरी पड़ी मिलने वाली चीज़) की त्रह है या'नी मसाकीन में खैरात कर दे या किसी भी मस्रफे खैर

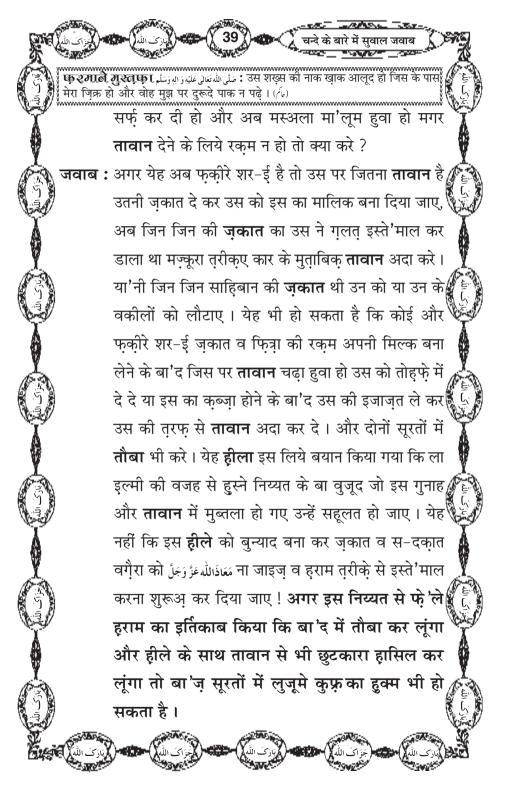
खर्च कर दे, अगर येह भी न बन पड़े तो उस का हुक्म लुक्ते

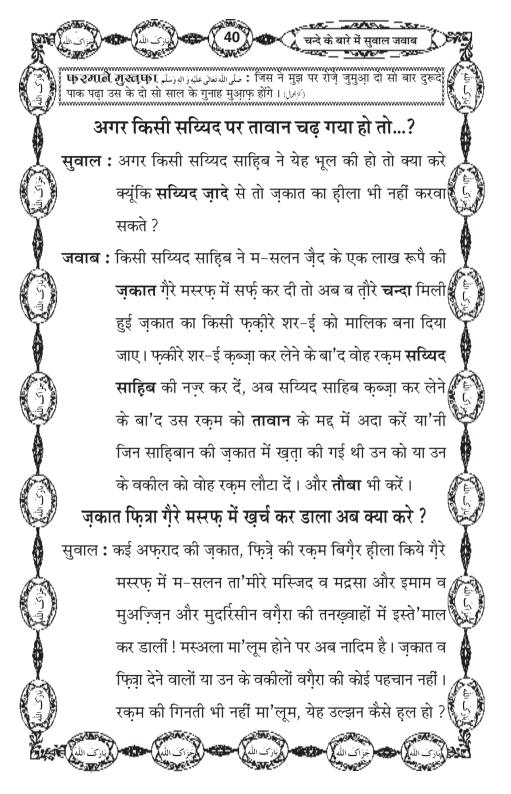


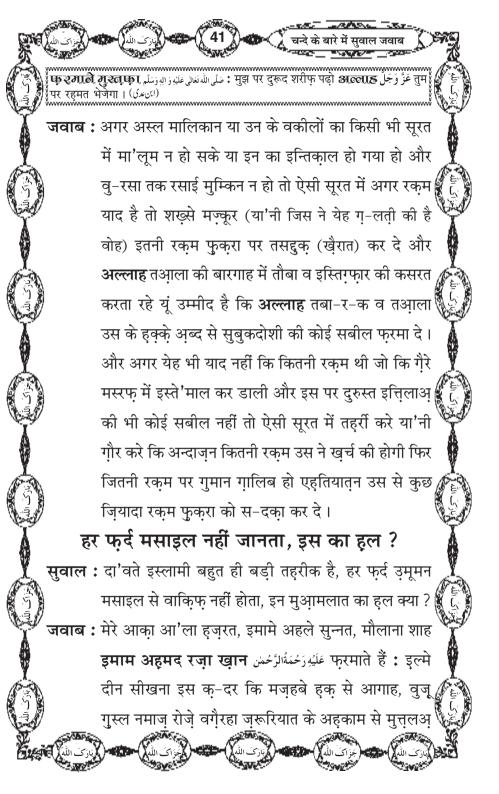


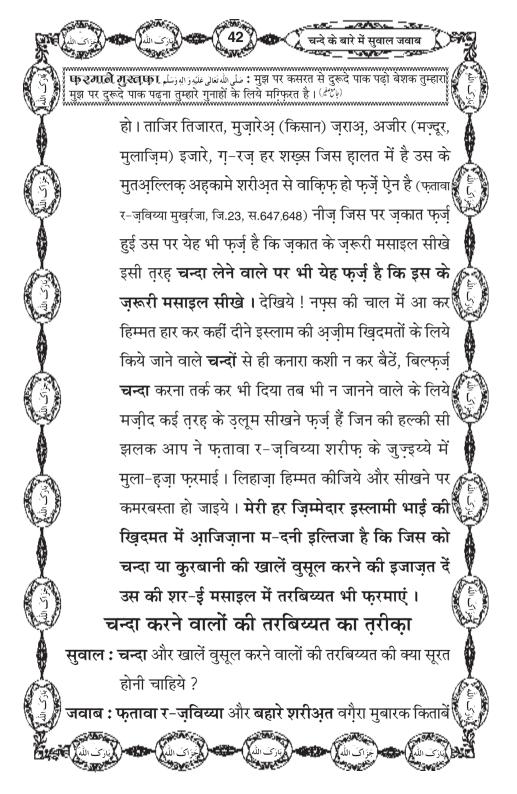


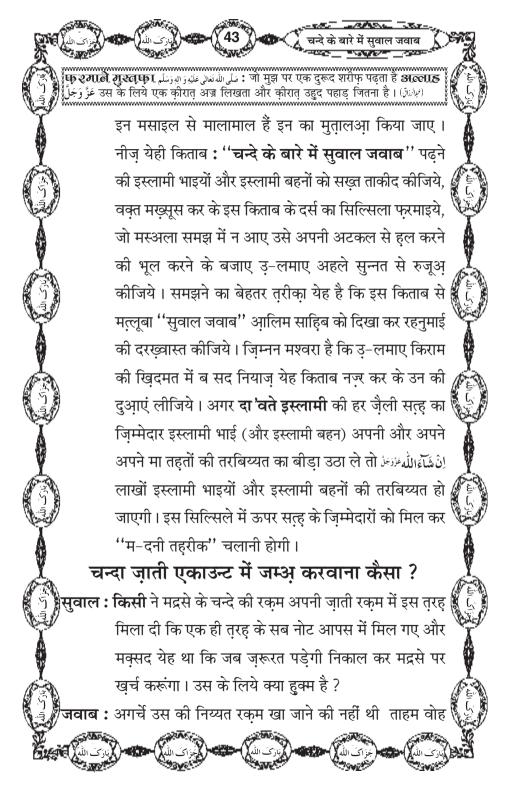


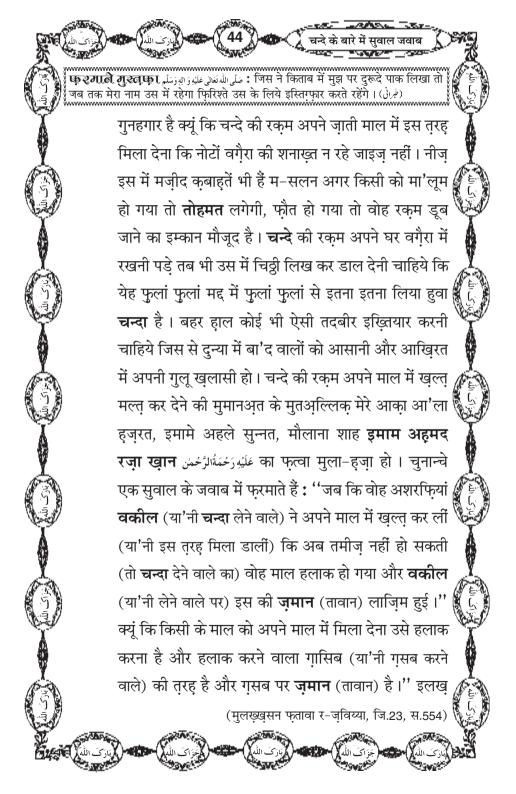


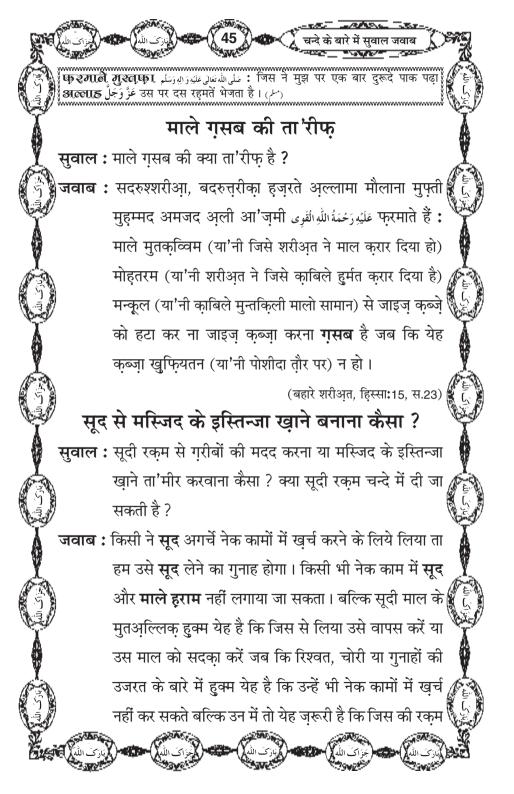






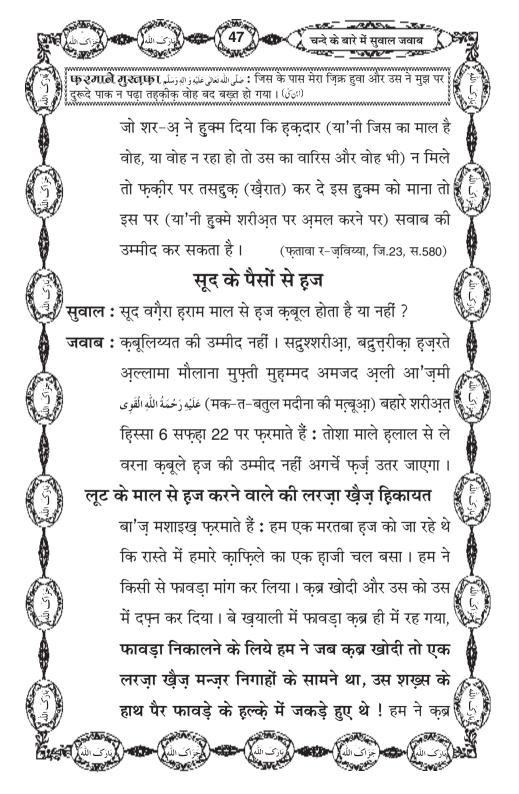






फुश्माती मुख्तुष्का عنگورلوزسکر जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया। बोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طِرَنِ)

> है उसे ही वापस लौटाए और वोह न रहे हों तो उस के वुरसा को दे और वोह भी न मिलें तो फिर सदका कर ने का हक्म है चुनान्चे मेरे आका आ'ला हजरत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रजा खान عَلَيُه رَحُمَةُ الرَّحُمٰ खान عَلَيْه رَحُمَةُ الرَّحُمٰ وَاللَّهِ عَلَيْهِ رَحُمَةُ الرَّحُمٰ وَاللَّهِ عَلَيْهِ رَحُمَةً الرَّحُمٰ وَاللَّهِ عَلَيْهِ رَحُمَةً الرَّحُمٰ وَاللَّهِ عَلَيْهِ رَحُمَةً الرَّحُمٰ وَاللَّهِ عَلَيْهِ وَحَمْةً الرَّحُمٰ وَاللَّهِ وَاللَّهُ وَاللَّالِي وَاللَّهُ وَاللَّاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللّلَّا لَلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ ولَا اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَلَّا لَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالِي اللَّهُ وَاللَّهُ وَاللَّالِي وَاللَّاللَّالِي وَاللَّا لَلَّالِمُ الللَّالِي وَاللَّا لَاللَّالِي وَاللَّهُ وَاللَّ जो माल रिश्वत या तगन्नी (या'नी गाने) या चोरी से हासिल हुवा उस पर फ़र्ज़ है कि जिस जिस से लिया उन पर वापस कर दे, वोह न रहे हों उन के वुरसा को दे, पता न चले तो फ़क़ीरों पर तसद्दुक करे। खरीदो फरोख्त किसी काम में उस माल का लगाना हरामे कर्ल्ड है बिगैर सुरते मज्कुरा के कोई तरीका इस के वबाल से सुबकदोशी का नहीं येही हुक्म सूद वगैरा उ़कूदे। फासिदा का है फर्क सिर्फ इतना है कि यहां जिस से लिया बिल्खुसूस उन्हें वापस करना फर्ज नहीं बल्कि उसे इख्तियार है कि (जिस से लिया है) उसे वापस दे ख़्वाह इब्तिदाअन तसद्दुक (यानी खैरात) कर दे। (फ्तावा र-ज्विय्या, जि.23, स.551) और येह भी याद रखे कि सुद व रिश्वत वगैरा हराम माल को नेक कामों में खर्च कर के सवाब की उम्मीद रखने के बारे में मेरे आका आ'ला हजरत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रजा खान عَلَيُهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَن फरमाते हैं : उसे या'नी माले हराम को खैरात कर के जैसा पाक माल पर सवाब मिलता है उस की उम्मीद रखे तो सख़्त हराम है, बल्कि फु -क़हा (رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالَى) ने कुफ़्र लिखा है । हां वोह



क्र**्गारी मु**झ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा مَنْ وَجُلَّ अख़्ला عُرَّ وَجُلًا अख़्ला عُرَّ وَجُلًا अख़्ला اللهِ عَلَيْ وَجُلًا अख़्ला اللهِ عَلَيْ وَجُلًا अख़्ला اللهِ عَلَيْ وَجُلًا عَلَيْهِ اللهِ عَلَيْهِ وَالْمِلَّا اللهُ عَلَيْهِ وَالْمِلَّا اللهُ عَلَيْهِ وَالْمِلَّةِ اللهِ عَلَيْهِ وَالْمِلَّةِ اللهِ عَلَيْهِ وَالْمِلَّةِ اللهِ عَلَيْهِ وَالْمِلَّةِ اللهِ عَلَيْهِ وَاللهِ عَلَيْهِ وَاللّهِ وَلِهُ وَمِنْ اللّهُ عَلَيْهِ وَاللّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ وَاللّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ وَاللّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ وَاللّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ وَاللّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ وَاللّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ وَاللّهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ وَاللّهُ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْهِ عَلَيْ

फ़ौरन बन्द कर दी और फावड़े वाले को कुछ पैसे दे कर जान छुड़ा ली। फिर वतन वापसी पर महूंम हाजी की बेवा से उस के आ'माल के बारे में मा'लूमात की तो उस ने बताया कि एक मरतबा इस के हमराह एक मालदार शख़्स ने सफ़र किया। रास्ते में इस ने उस को मार डाला और उस के माल पर क़ब्ज़ा कर लिया अब येह हज और जिहाद सब कुछ उसी के माल से करता रहा है।

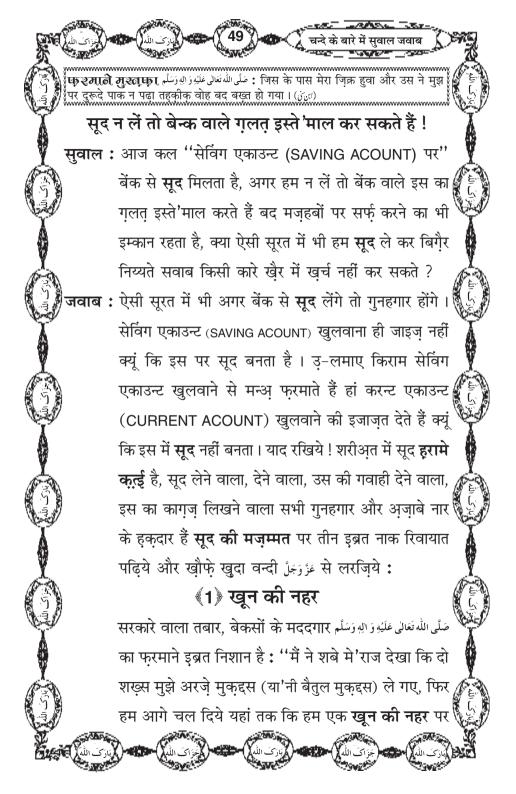
हराम माल से हुज करने वाले की शामत

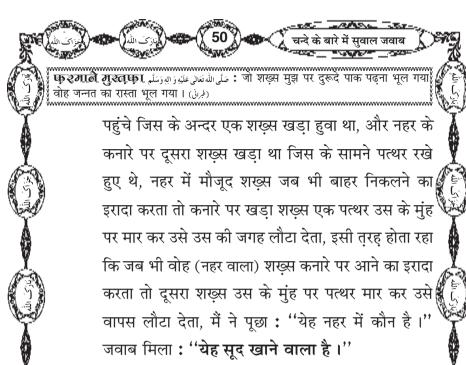
मरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान مَلْيُورُحُمَهُ لِرُحُمَهُ بِهِ फ़्रमाते हैं : सूद के रूपिये से जो कारे नेक किया जाए इस में इस्तिहक़ाक़े सवाब नहीं । हदीस शरीफ़ में है : "जो माले हराम ले कर हज को जाता है जब लब्बेक कहता है, हातिफ़, ग़ैब से जवाब देता है : न तेरी लब्बेक क़बूल, न ख़िदमत पज़ीर, और तेरा हज तेरे मुंह पर मर्दूद है । यहां तक कि तू येह माले हराम (जो) कि तेरे क़ब्ज़े में है उस के मुस्तिहक़्क़ों को वापस दे । हदीस में है : रसूलुल्लाह مَلَى الله تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهِ وَسَلَم विश्वे अहलाह عَلَى الله تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهِ وَسَلَم عَلَى الله عَلَى عَلَى الله عَلَى

🕽 (1) इत्तिहाफुस्सादतुल मुत्तक़ीन, ब शरह एह्याउल उ़लूमिद्दीन, जि.4, स.727

(2) सहीह मुस्लिम, स.506, ह्दीस:1015







(सहीहुल बुखारी, जि.2, स.14, हदीस:2085)

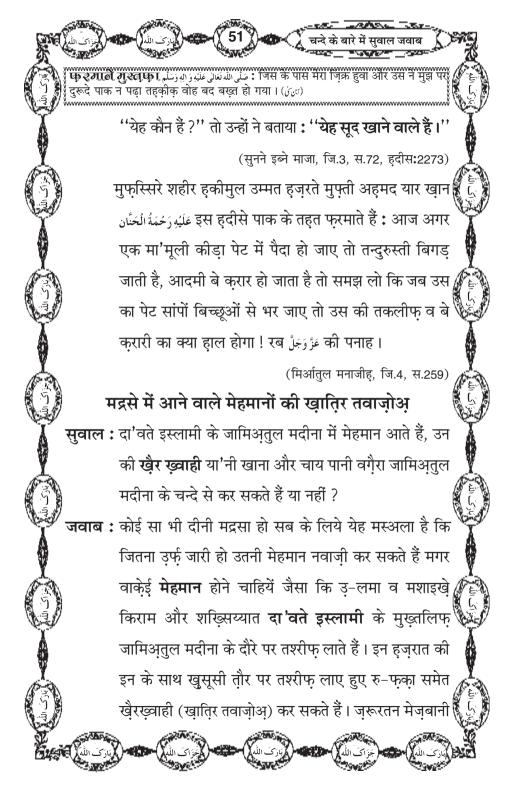
(2) गोया मां के साथ ज़िना

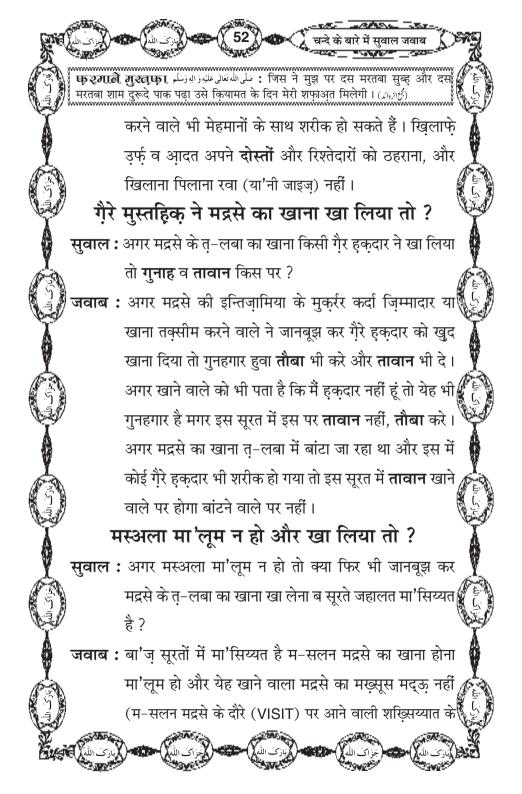
खा़-तमुल मुर्सलीन, रह़मतुल्लिल आ़लमीन कें कें कें कें कें मज्मूआ़ है, का फ़रमाने इब्रत निशान है: "सूद, 72 गुनाहों का मज्मूआ़ है, उन में सब से हल्का इस त़रह़ है जैसे आदमी अपनी मां से ज़िना करे और सब से बढ़ कर ज़ियादती किसी मुसल्मान की बे इज्ज़ती करना है।"

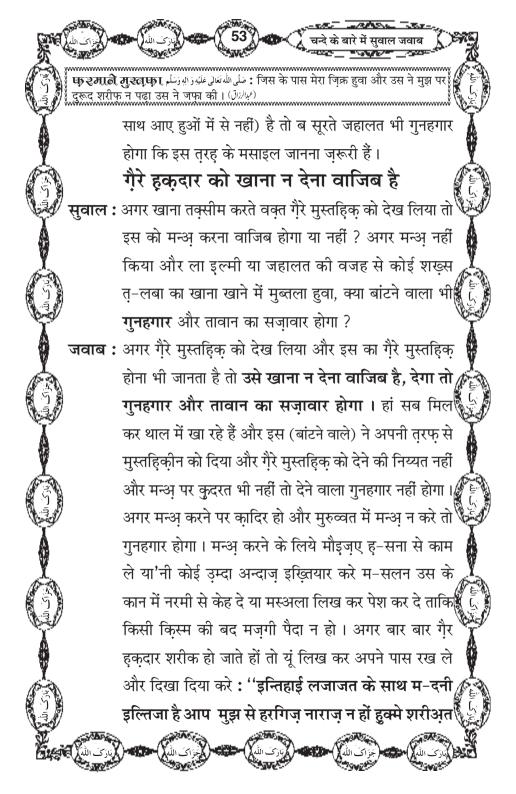
(अल मु'जमुल अवसत् लित्तंबरानी, जि.5, स.227, ह्दीस:7151)

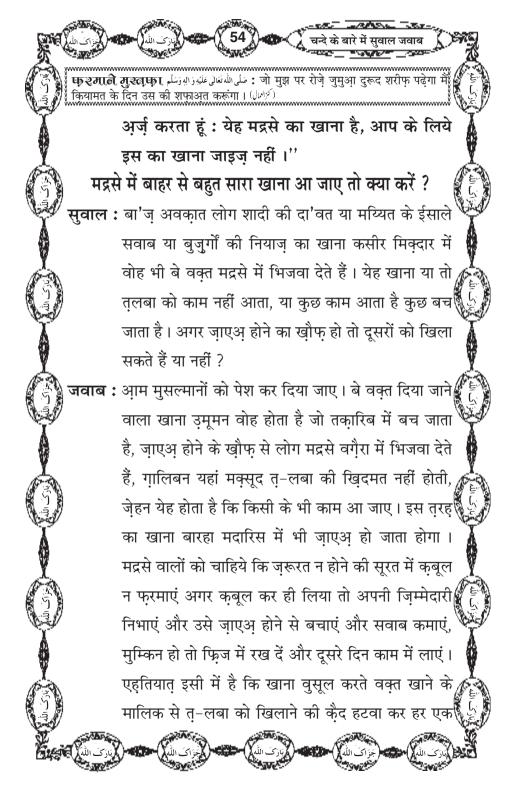
《3》 पेट में सांप

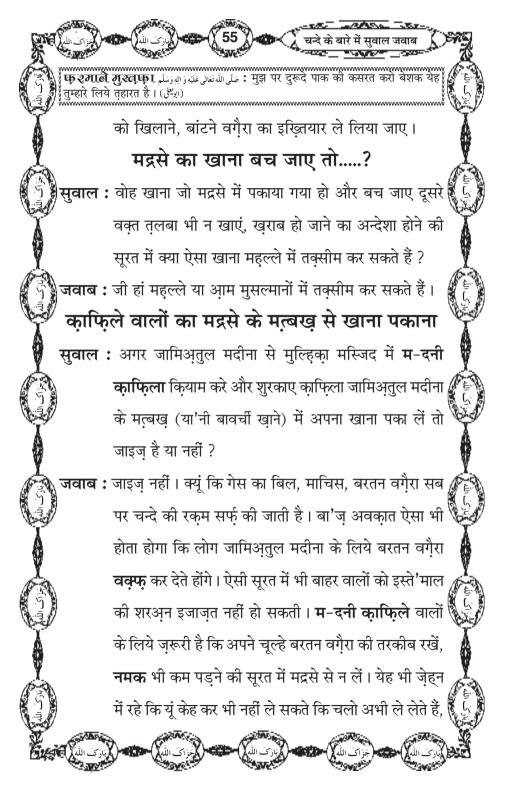
हुजूर निबय्ये करीम مَلَى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَ اللهِ وَسَلَّم का इर्शादे इब्रत बुन्याद है: मे'राज की रात मेरा गुज़र कुछ ऐसे लोगों पर हुवा जिन के पेट घरों की त़रह थे जिन में सांप थे जो पेटों के बाहर से भी नज़र आ रहे थे, मैं ने जिब्रईल (عَلَيْهِ السَّكَام) से दरयाफ़्त फ़्रमाया:

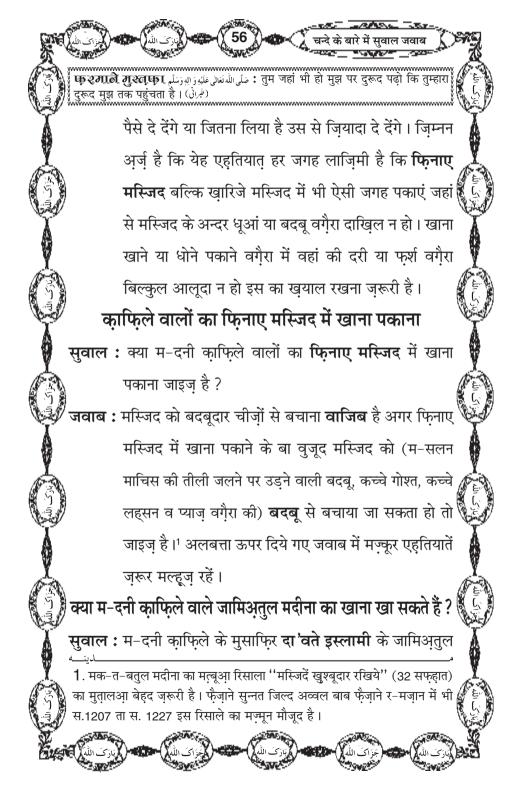


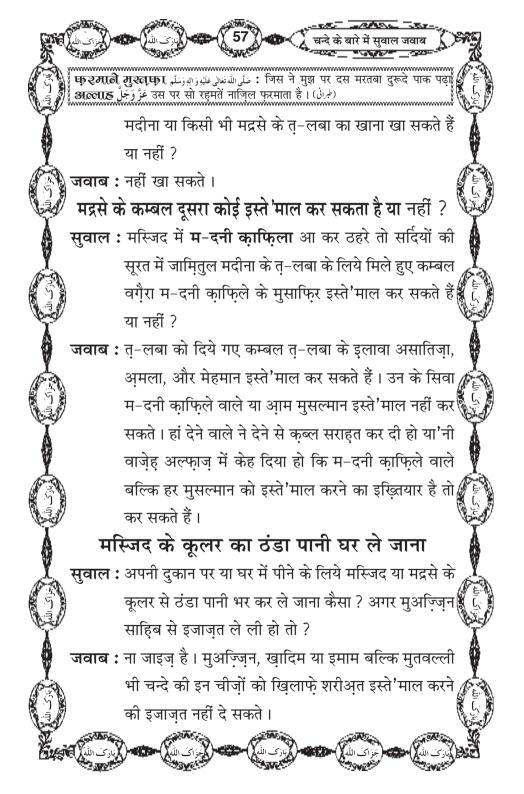


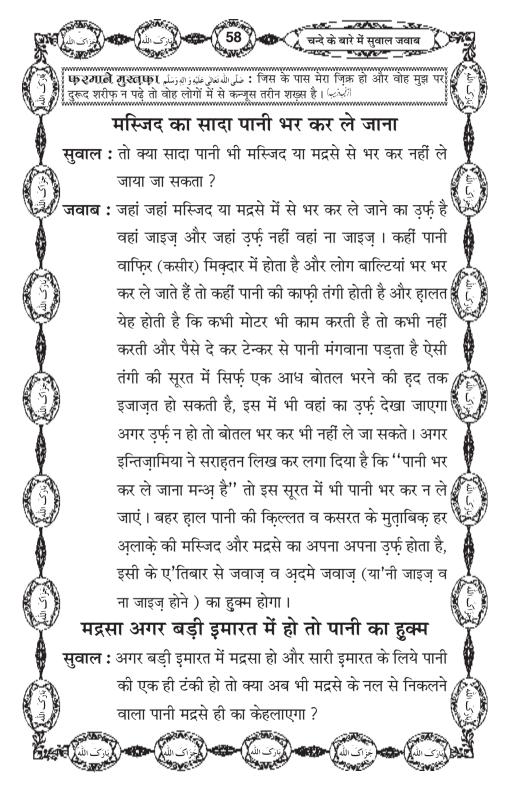


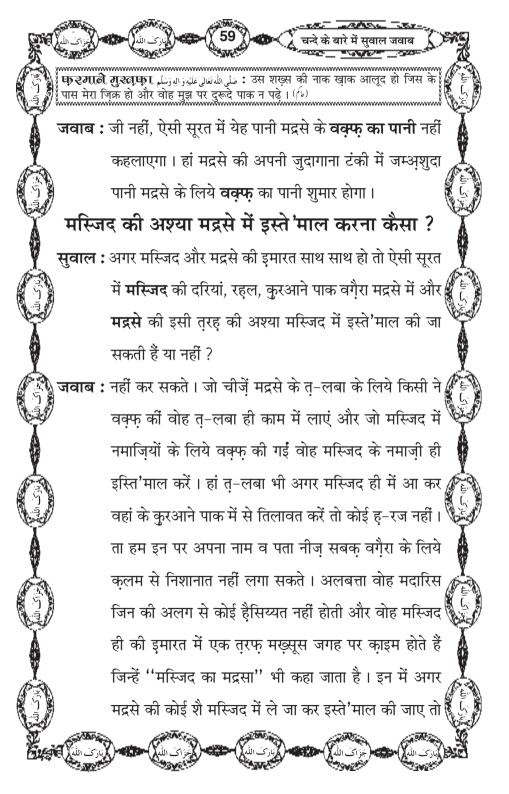


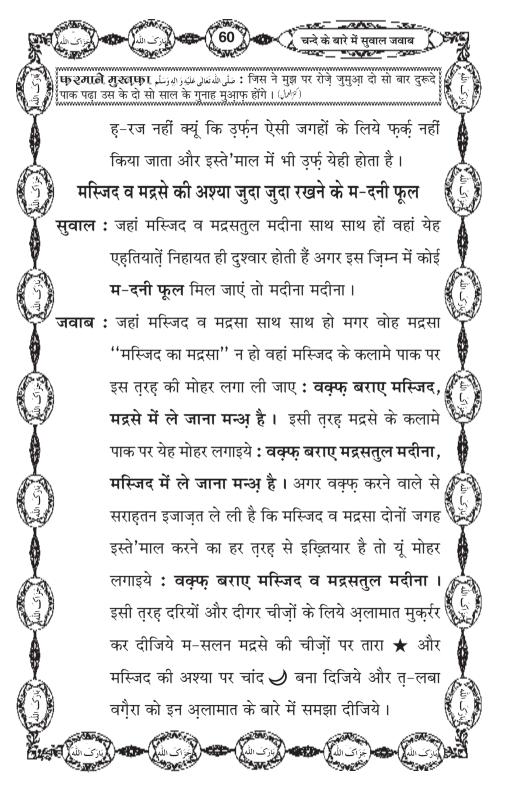


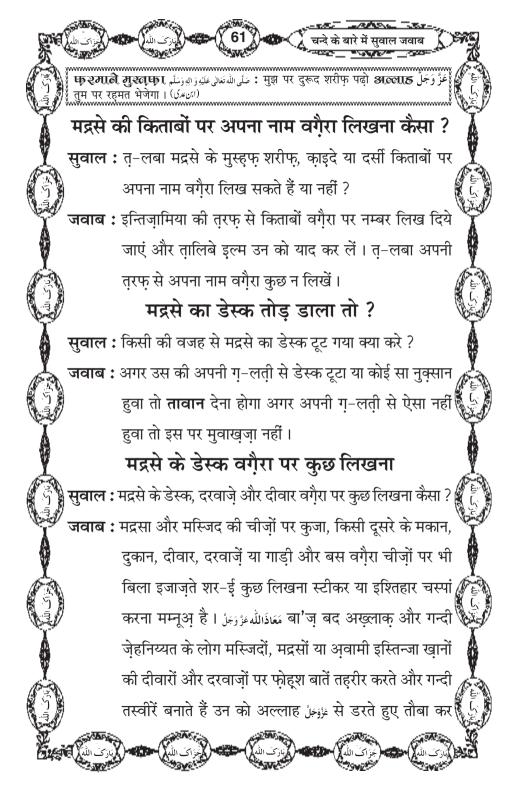


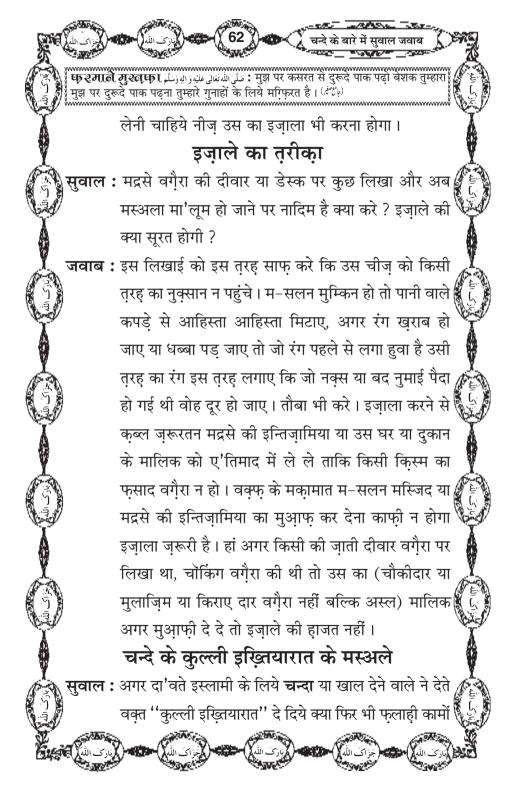


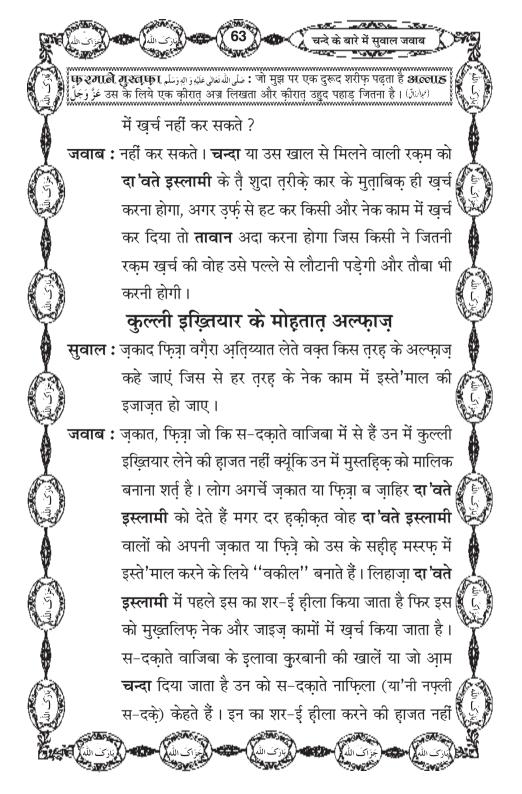


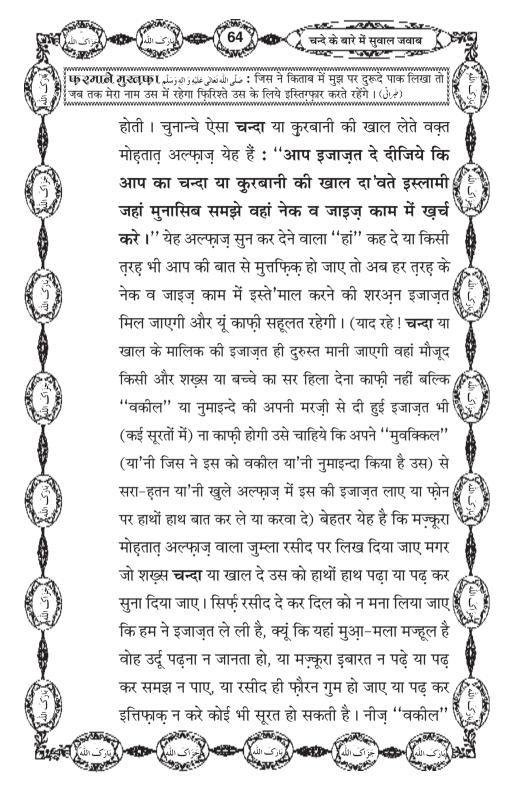


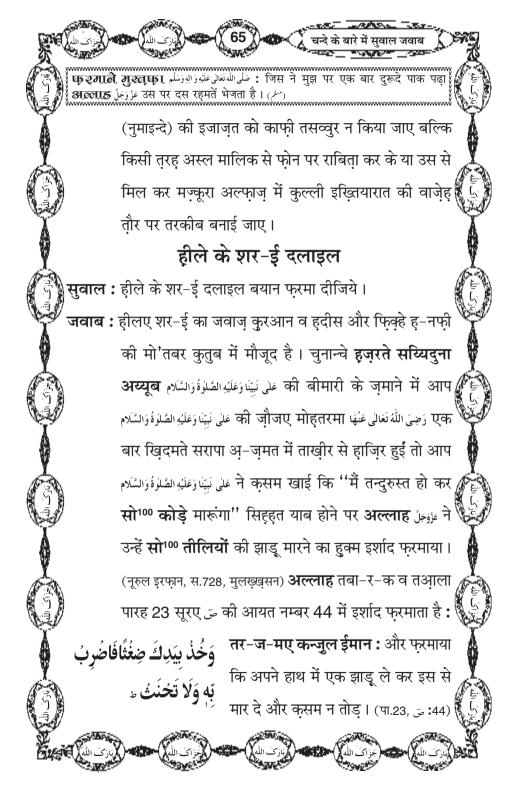


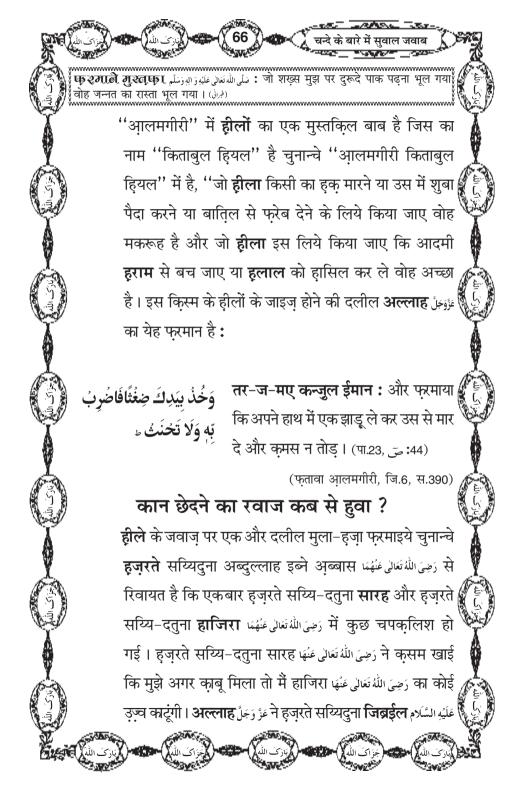


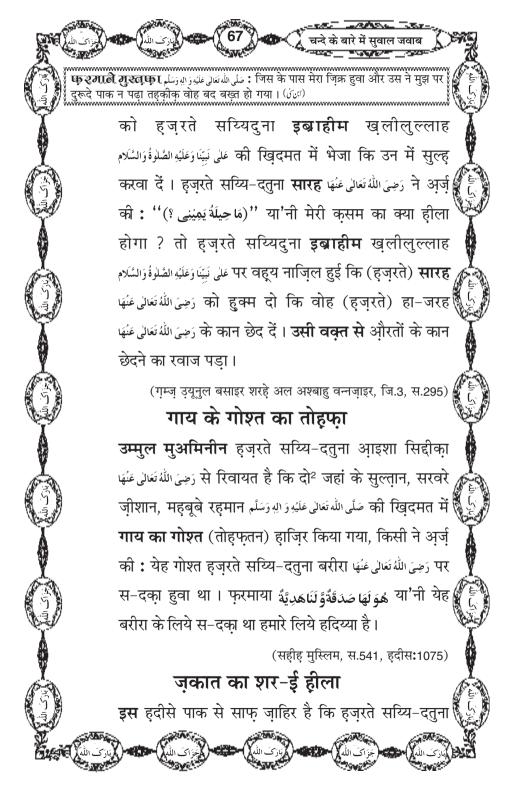


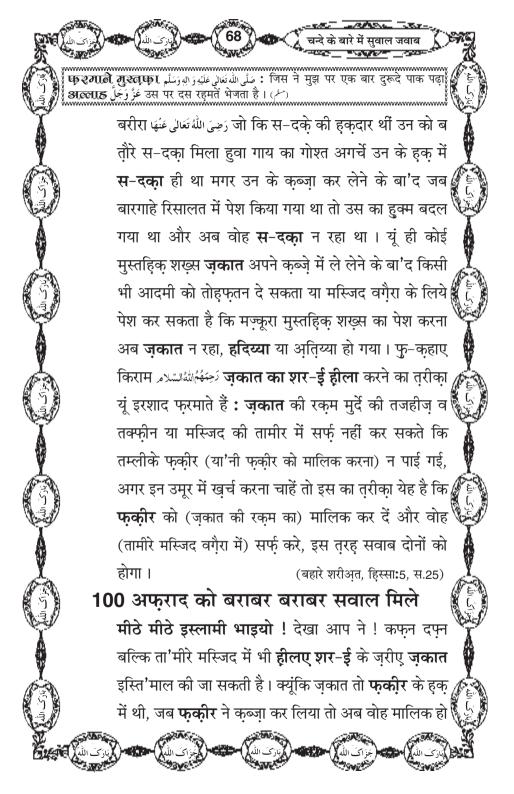


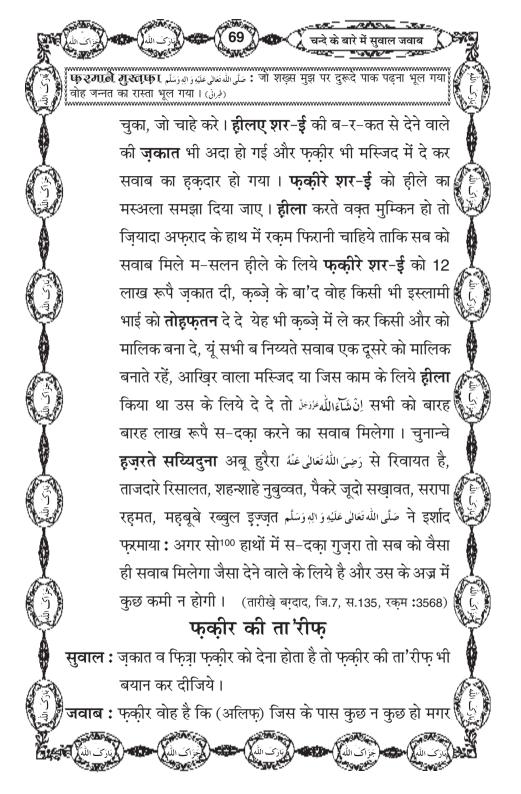


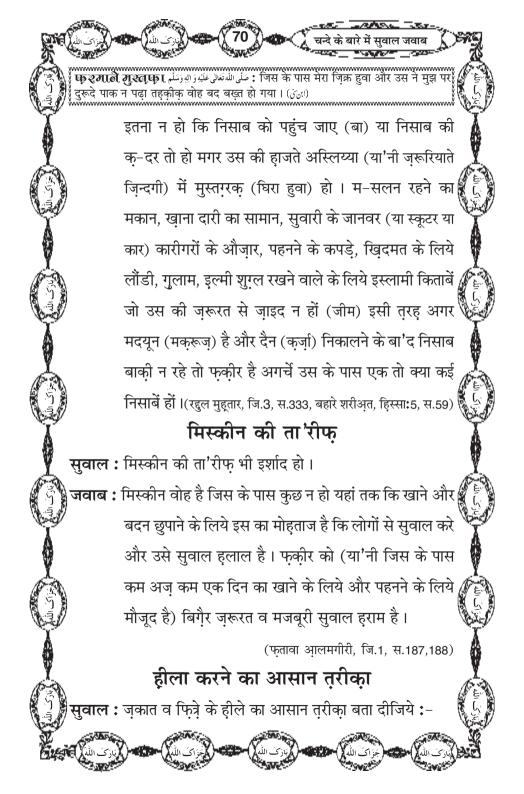


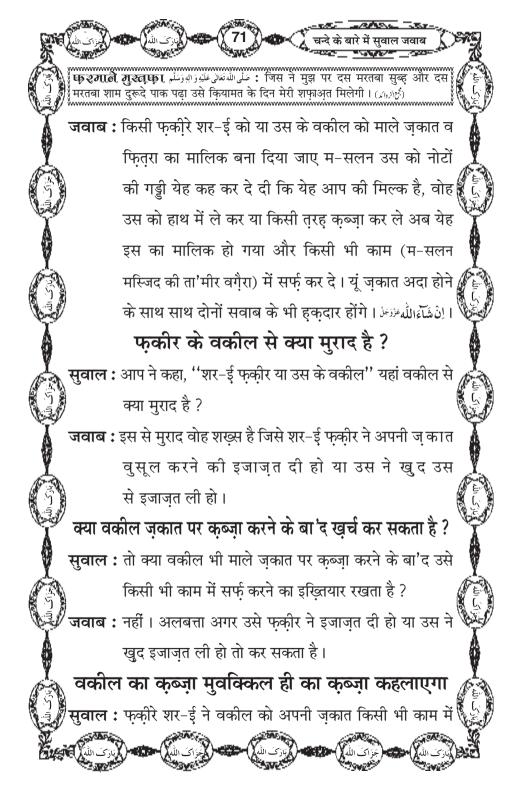


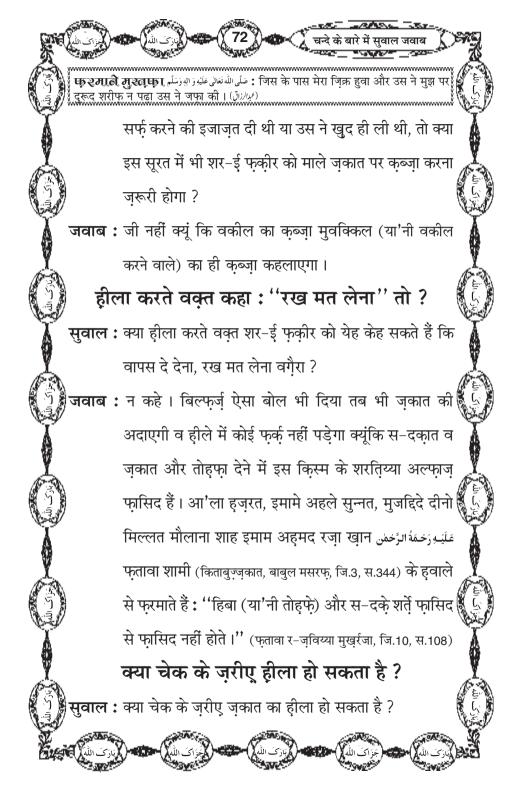


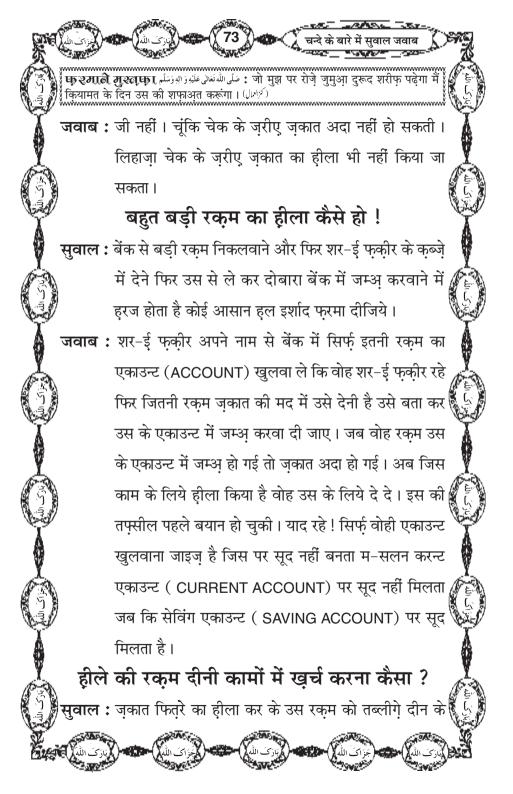


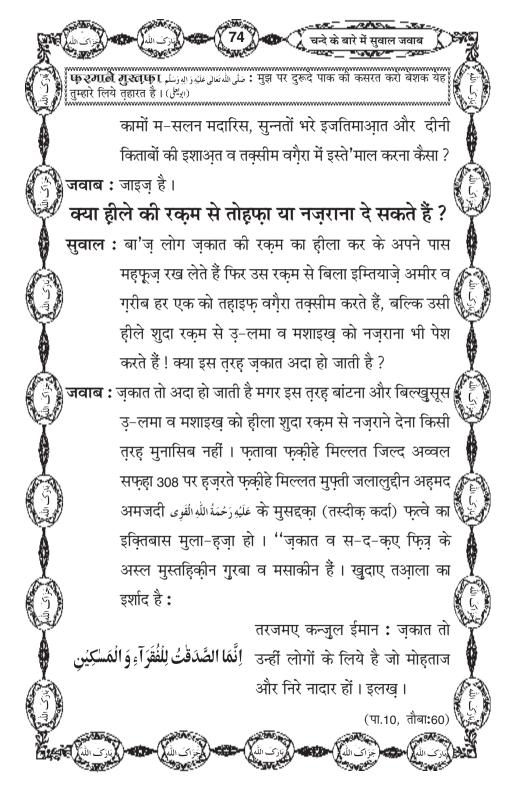


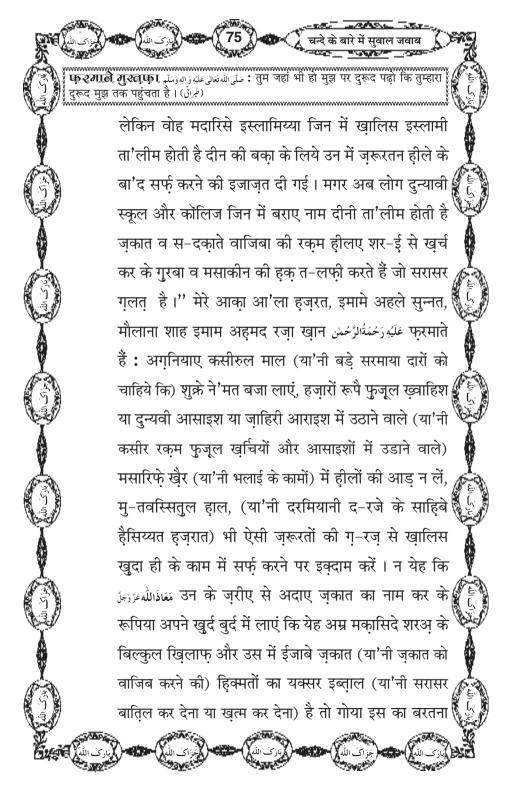


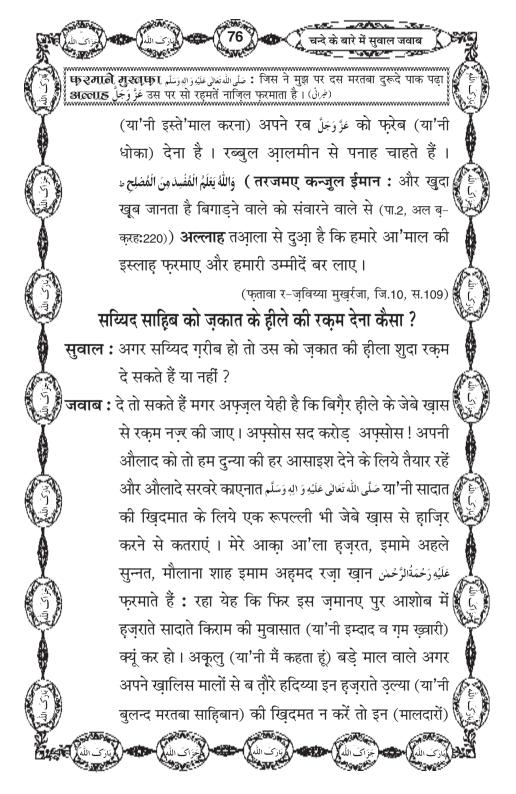


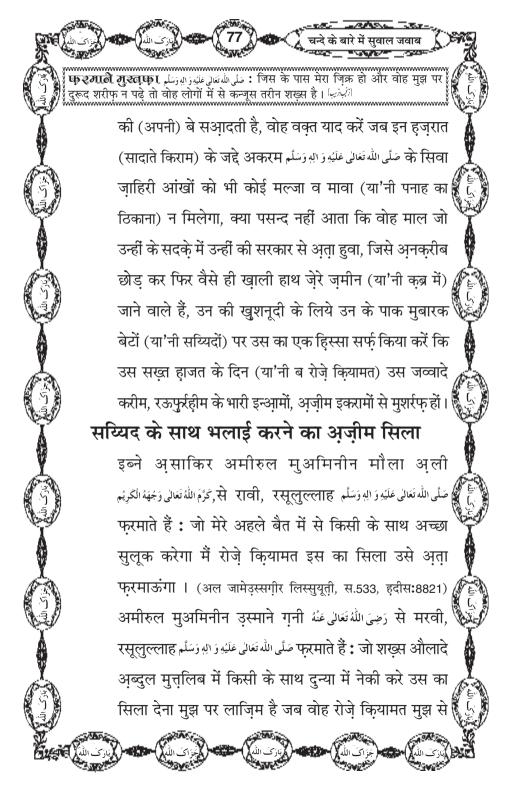


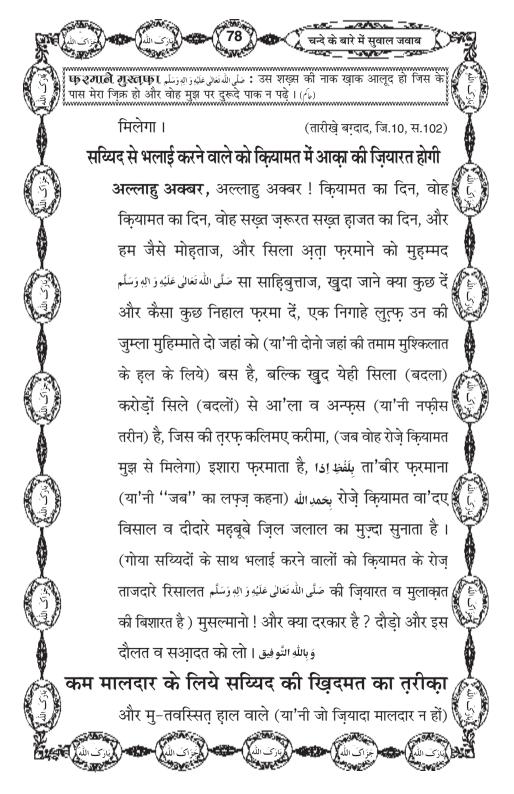


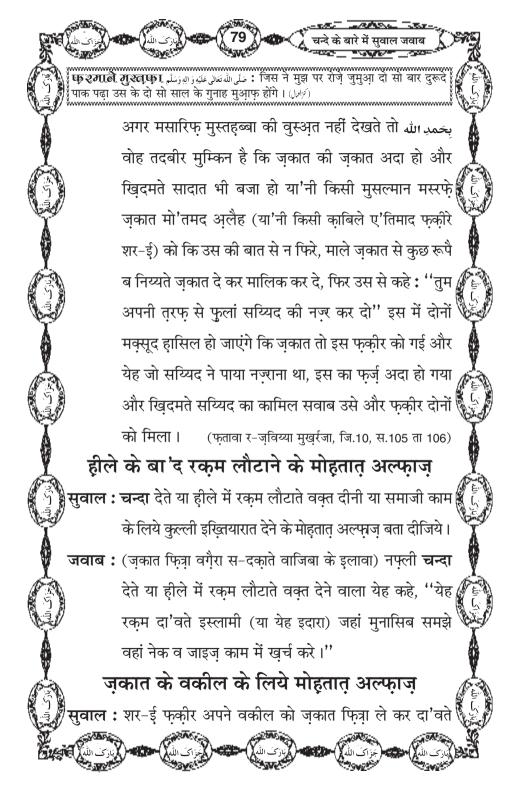


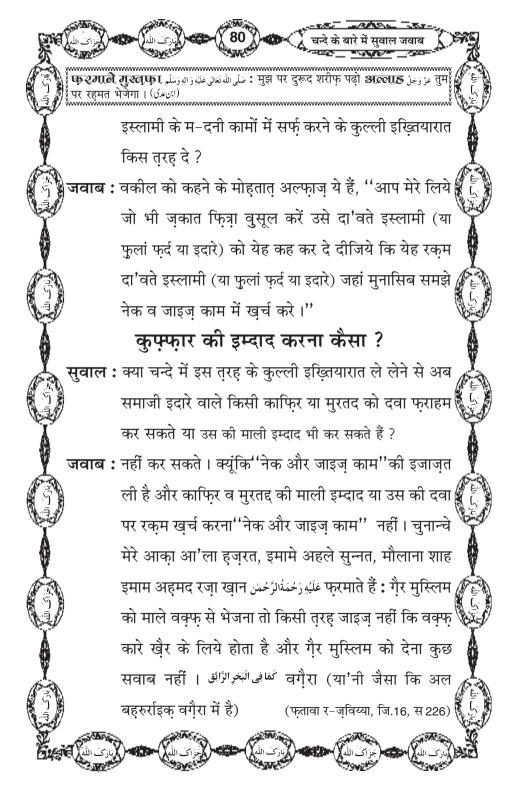


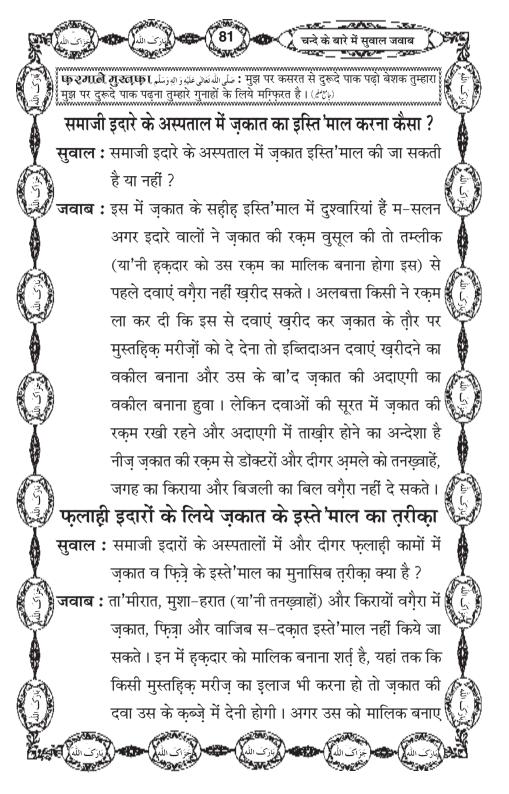


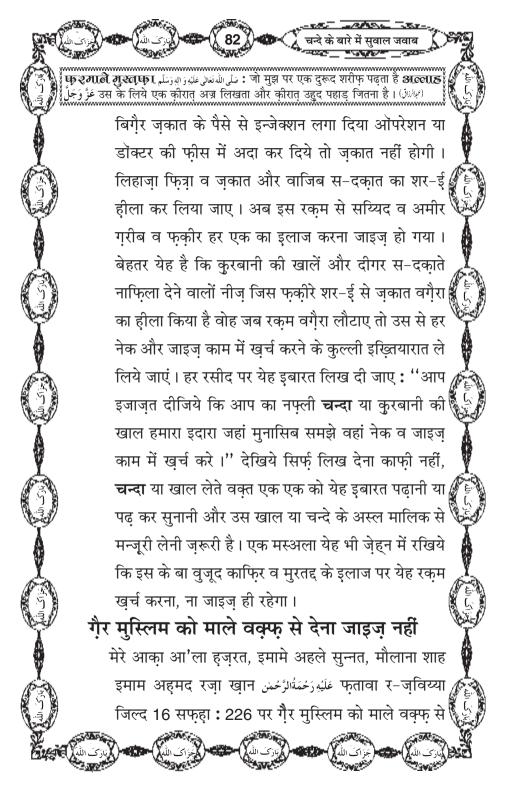


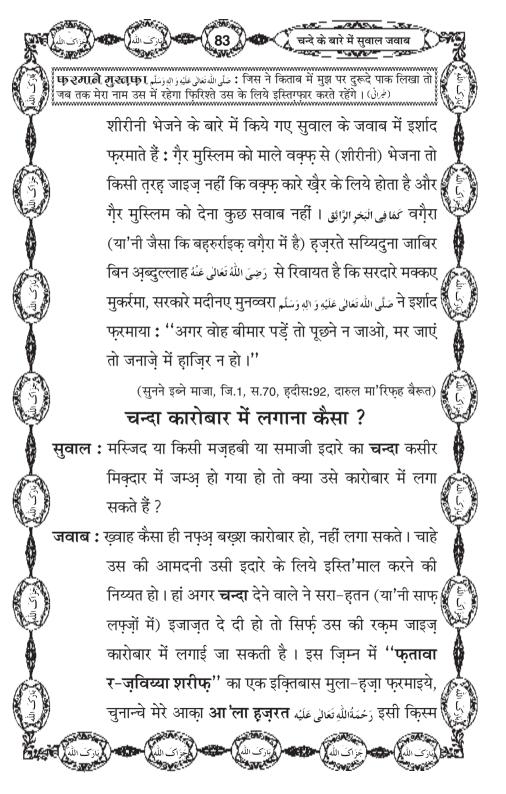


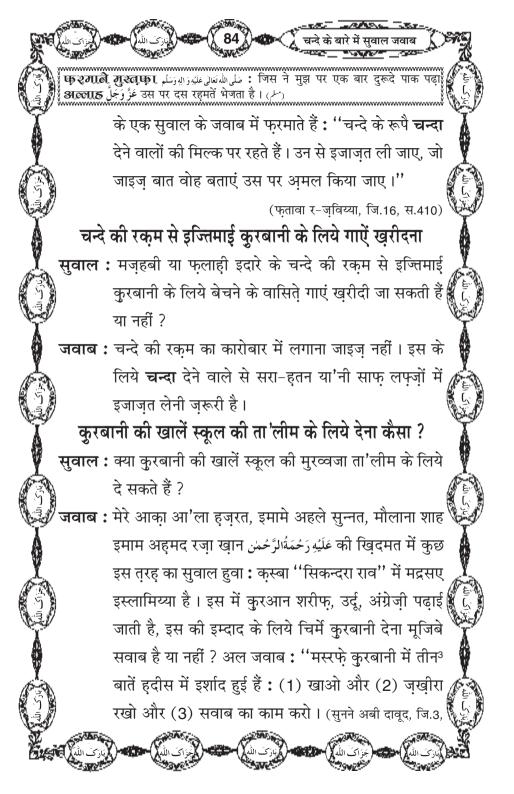


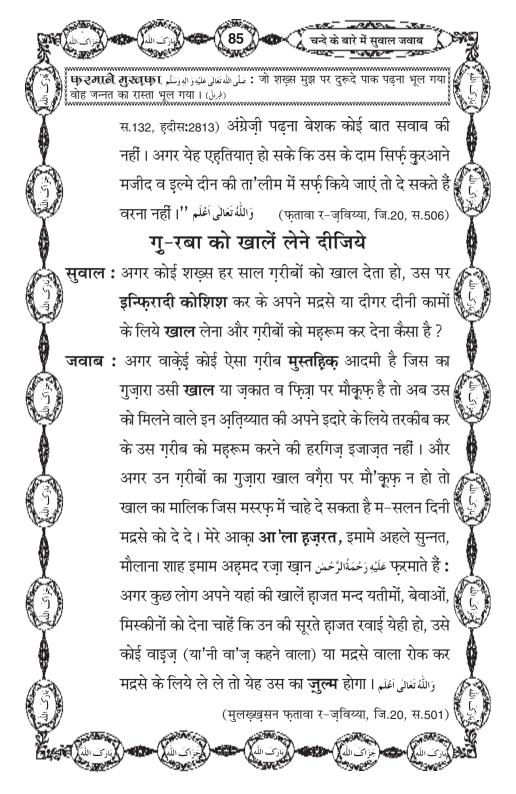


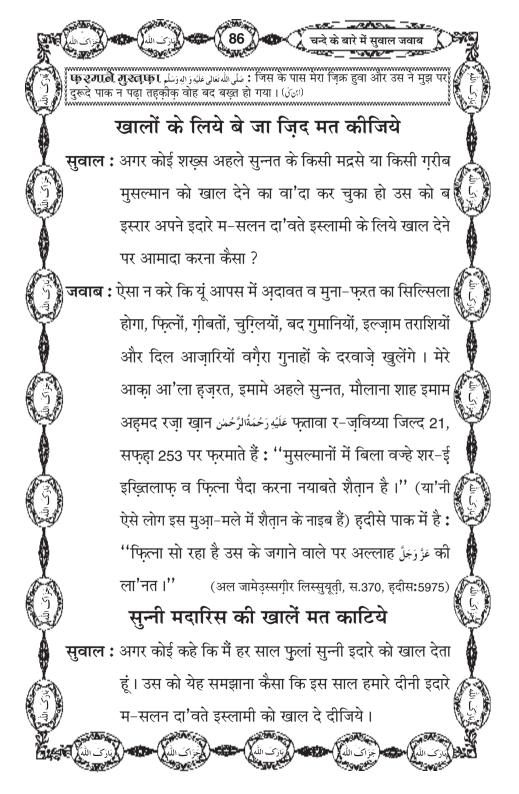


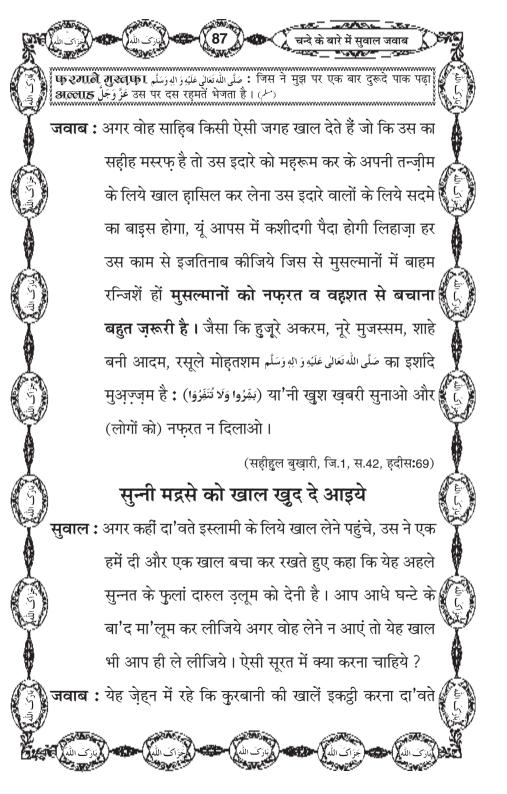


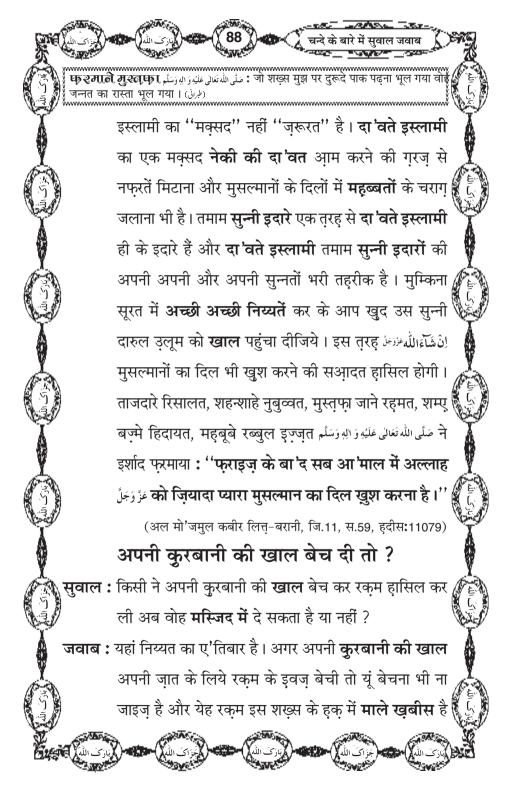


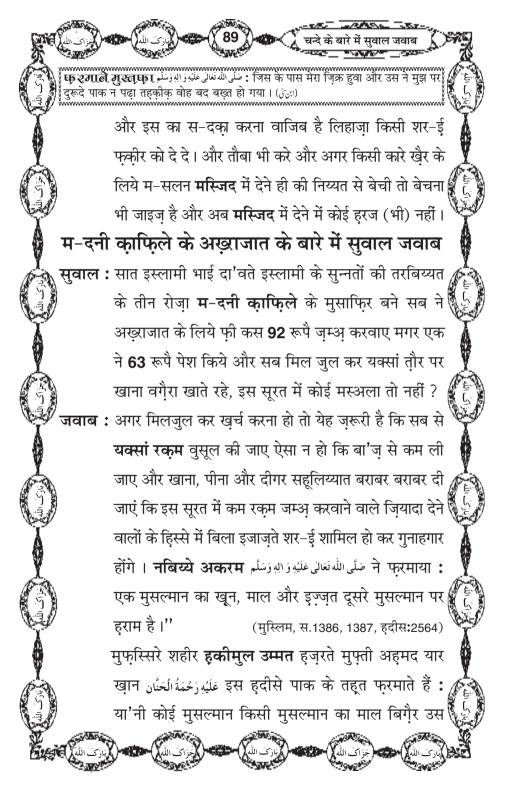


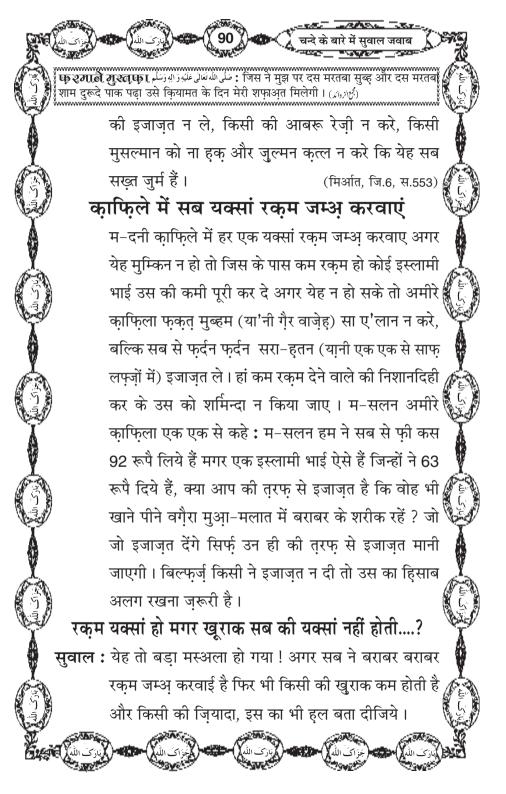


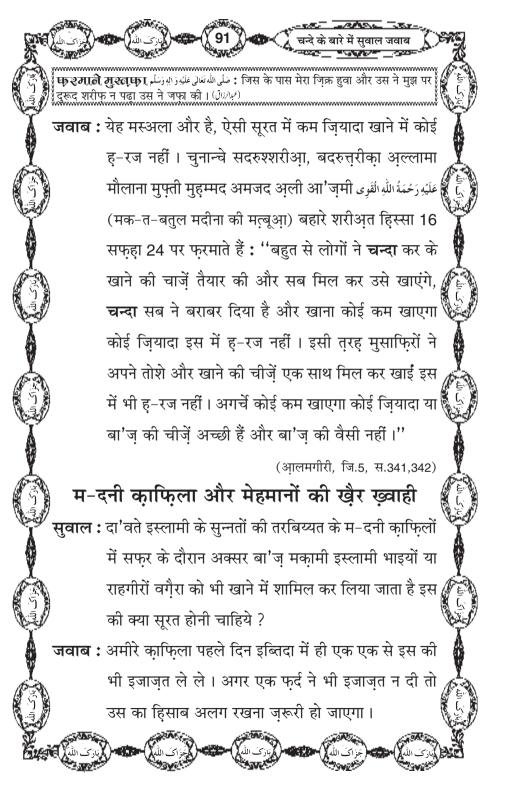


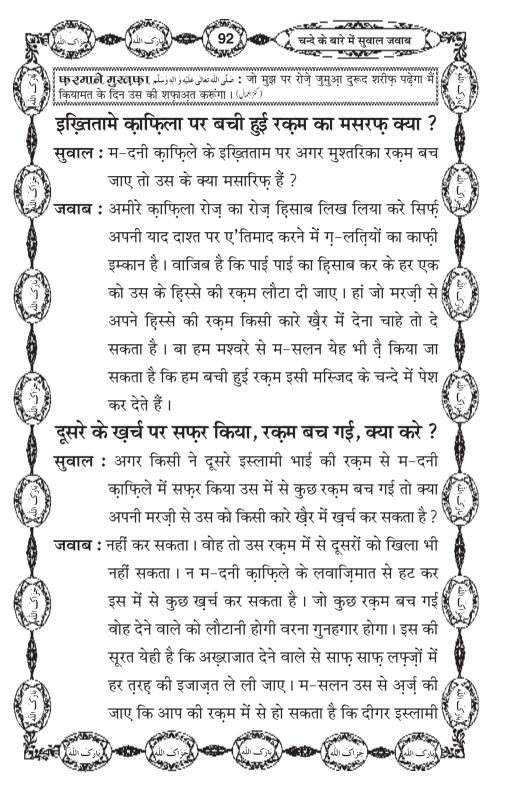


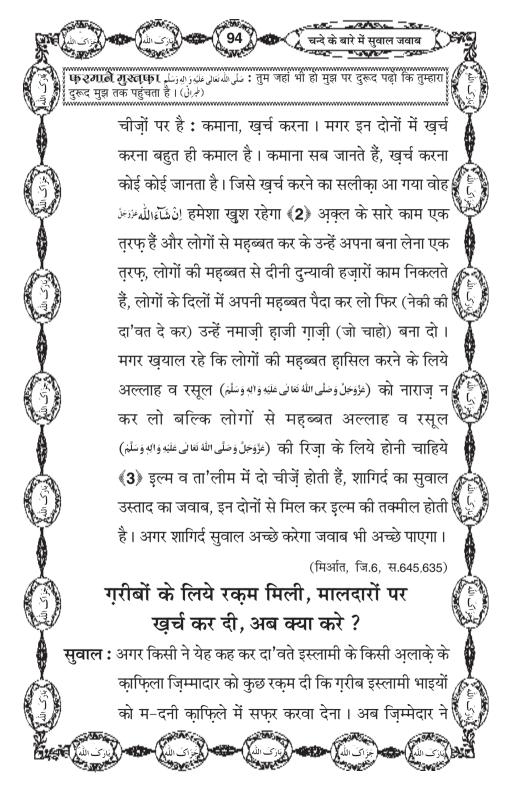


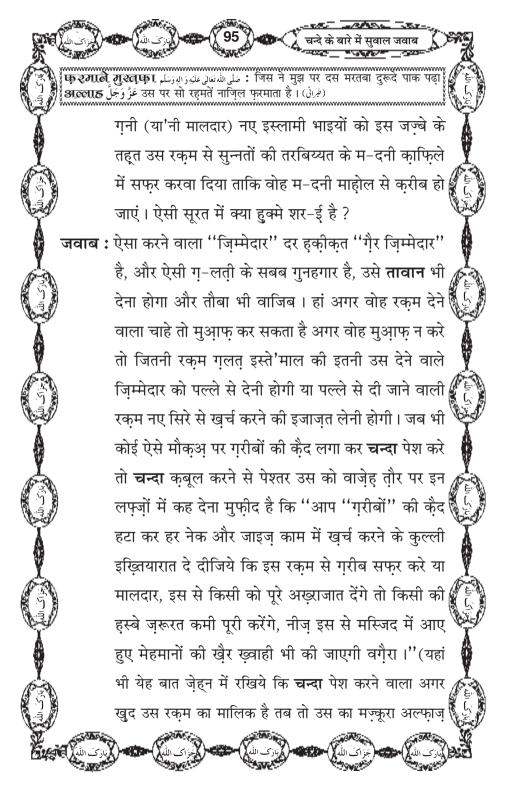


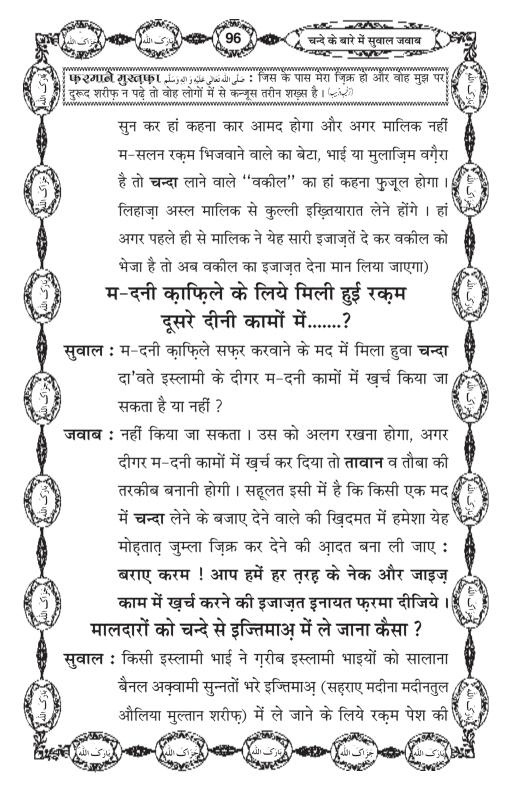


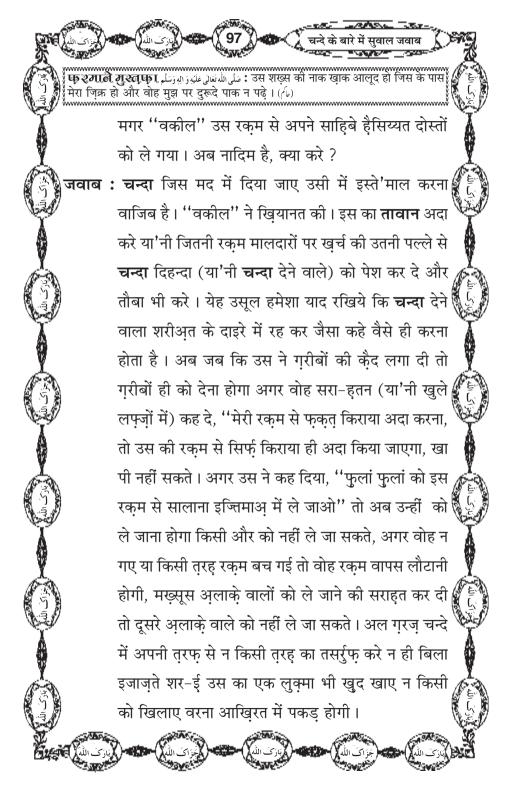


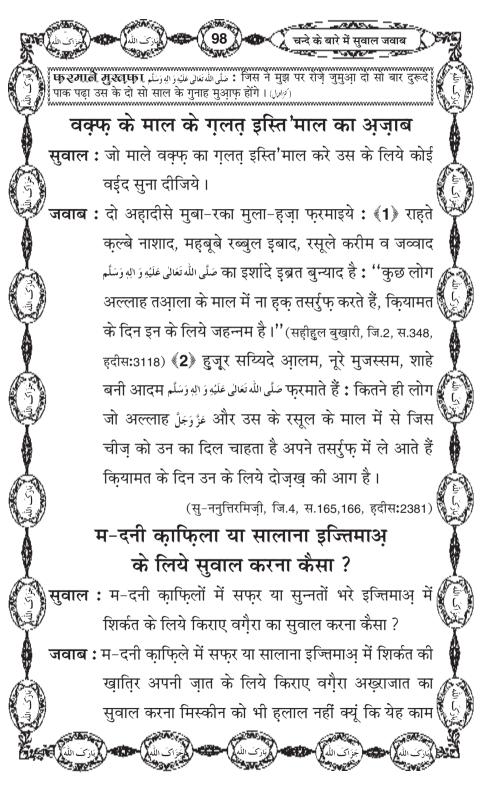


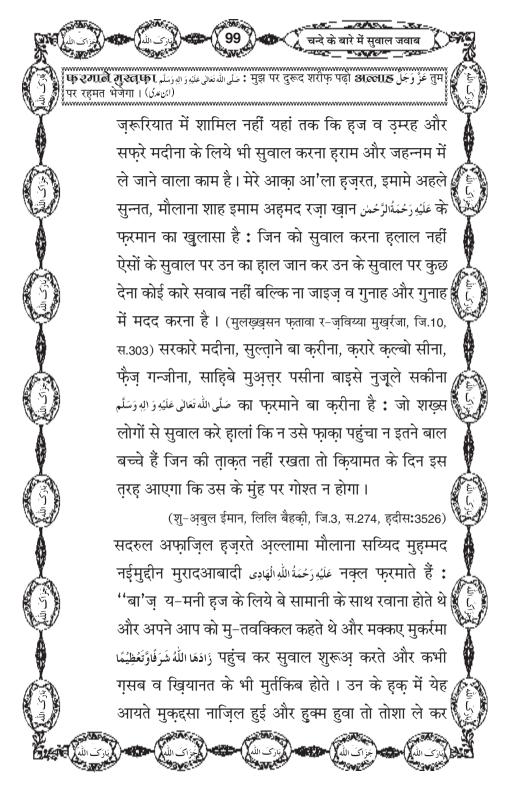


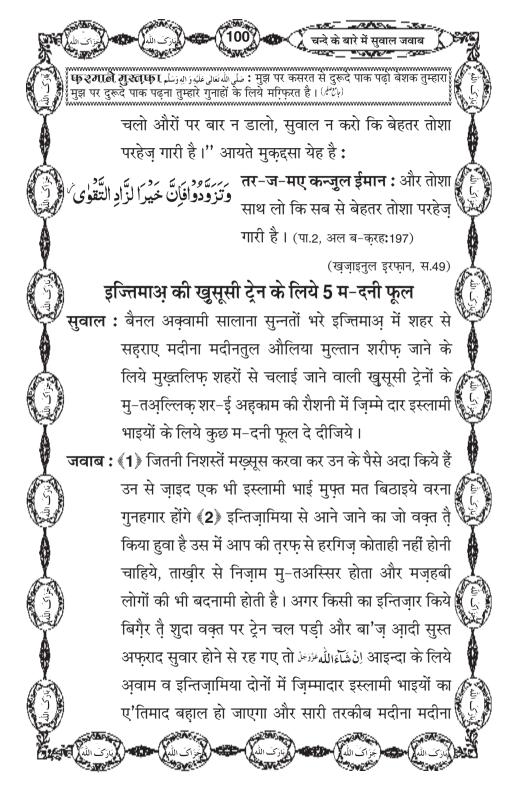


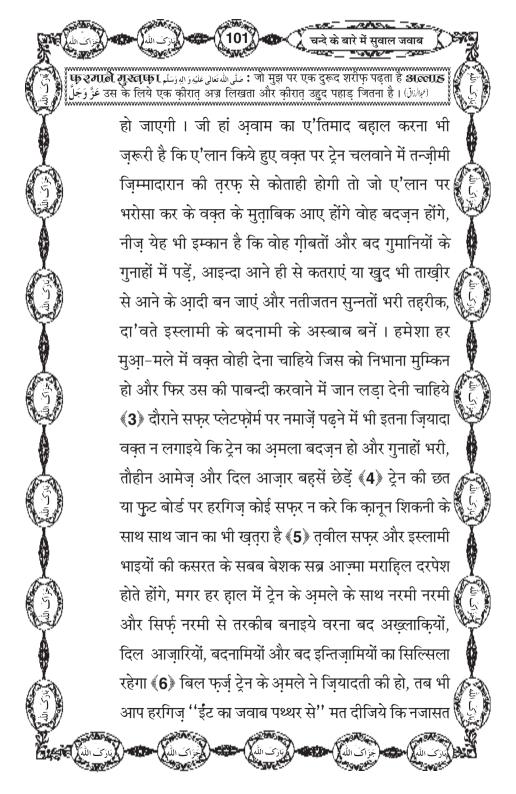


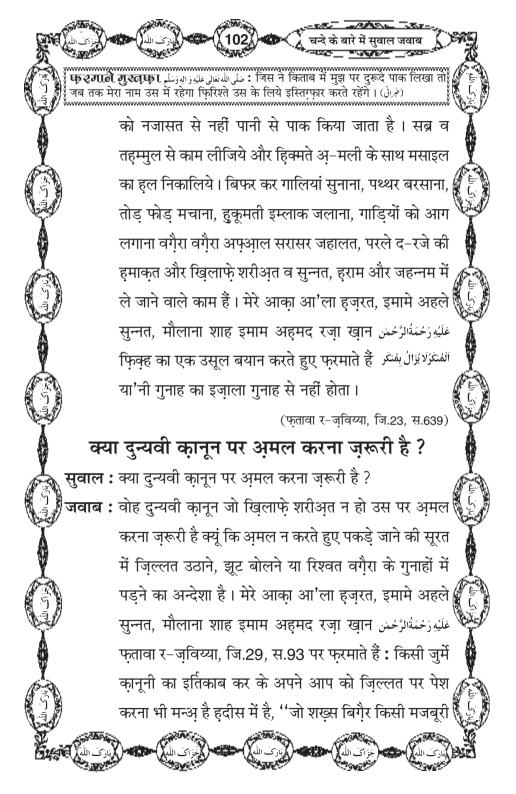


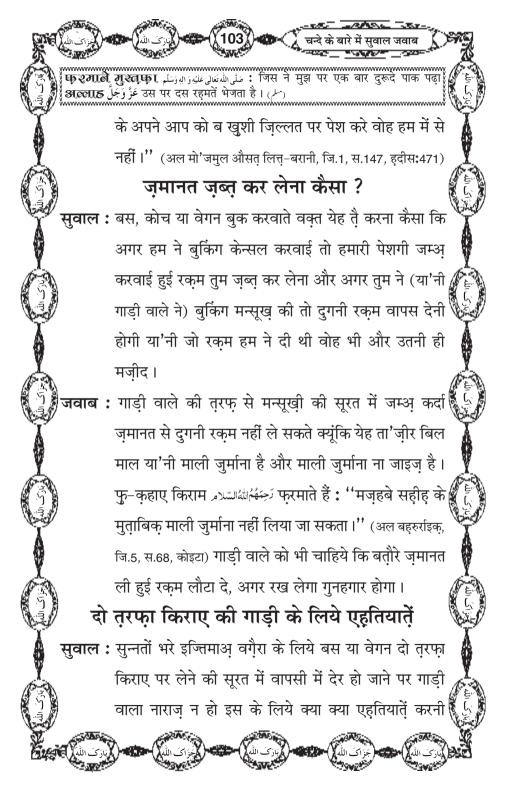


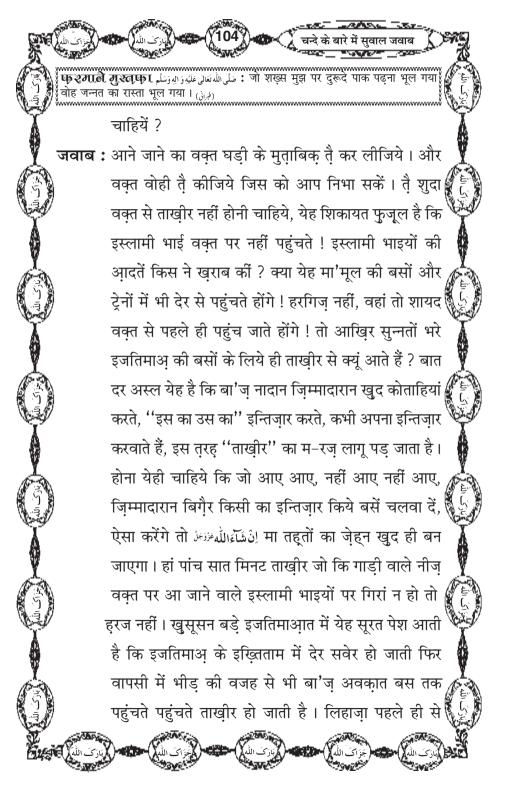


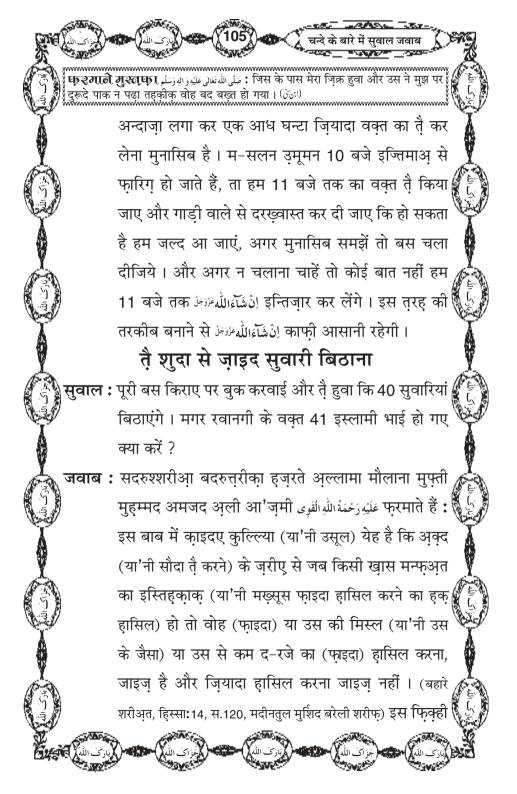


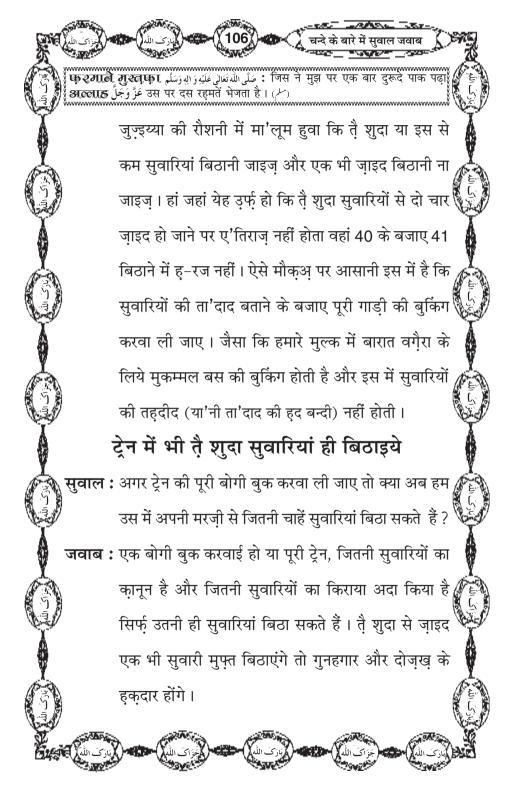


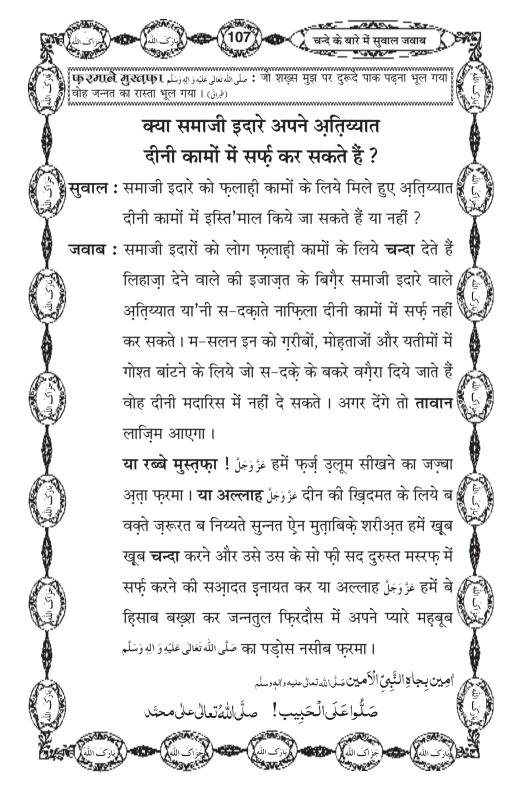


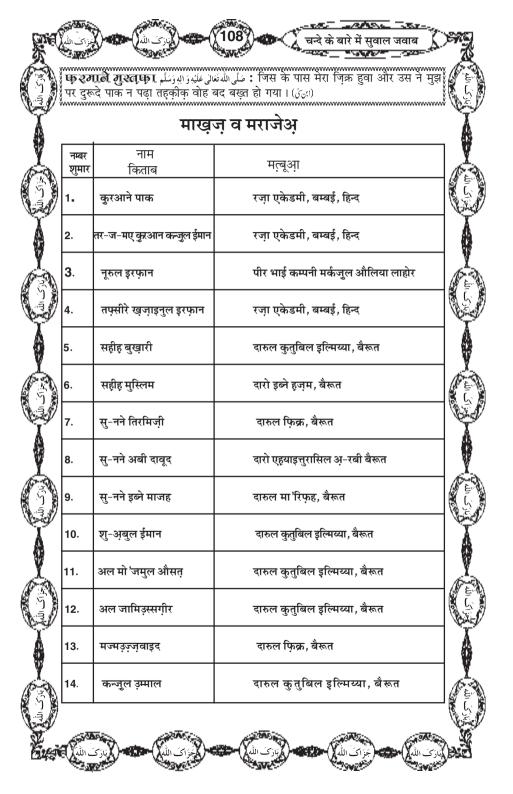














नम्बर शुमार	नाम किताब	मत्बूआ़
15.	मुस्नदे इमामअह़मद	दारुल फ़िक्र, बैरूत
16.	तारीख़े बग़दाद	दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बैरूत
17.	मिरकातुल मफ़ातीह	दारुल फ़िक्र, बैरूत
18.	अशि 'अ़तुल्लम्आ़त	कोएटा
19.	मिरआतुल मनाजीह ़	ज़ियाउल कुरआन पब्लीकेशन्ज़ मर्कजुल औलिया लाहो
20.	अल बह़रुर्राइक़	कोएटा
21.	दुरें मुख़्तार व रहुल मुह़तार	दारुल मा 'रिफ़ह, बैरूत
22.	फ़तावा आ़लमगीरी	कोएटा
23.	गम्ज् उयूनुल बसाइर	बाबुल मदीना कराची
24.	फ़तावा र-ज़्विय्या	रज़ा फ़ाउन्डेशन मर्कजुल औलिया लाहोर
25.	फ़तावा अम्जदिय्या	मक्तबए र-ज़विय्या बाबुल मदीना कराची
26.	बहारे शरीअ़त	मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची
27.	शर्हुस्सुदूर	मर्कज़े अहले सुन्नत ब-रकाते रज़ा
28.	इत्तिहाफुस्सा-दतुल मुत्तकीन	दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बैरूत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा الله تعالى عَلَيْهِ وَ اللهِ وَسَلَّم अच्छी निय्यत इन्सान को जन्नत में दाख़िल करेगी ।

(अलजामिउ़स्सग़ीर लिस्सुयूत़ी, स. 557, ह़दीस : 9326)









ألتحشد ليأوزب الطبين والطالوة والشلام على متيد التراملين أقابقة فاغزة باللومن القيكن الرجيه بشد الله الرعين الرحيد



ं तब्लीगे कुरआनो सुन्तत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा 'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में व कसरत सुन्ततें सीखी और सिखाई जाती है, हर जुमा'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा 'वते इस्लामी के हफ़्ताबार सुन्ततों भरे इंजिमाओं में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इंजिमाओं है। आशिक़्ते रसूल के म-दनी काफ़िलों में व निय्यते सवाब सुन्ततों की तरिबय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फिके मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इंजिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्भ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, المُعَلَّلُ اللهُ وَاللهُ عَلَيْهُ وَاللهُ وَاللهُ عَلَيْهُ وَاللهُ اللهُ اللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ اللهُ وَاللهُ اللهُ وَاللهُ وَالللهُ وَالللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَاللهُ وَا

हर इस्लामी भाई अपना येह जेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है المَا اللهُ اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْهِ اللهُ को इस्लाह की कोशिश करनी है المَا اللهُ اللهُ اللهُ عَلَيْهِ اللهُ اللهُ को इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी काफ़िलों" में सफ़र करना है المَا اللهُ اللهُ

मक-त-बतुल मदीना की शाखें

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ओफ्सि के सामने, मुम्बई फोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महल, ठर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560

नागपूर : गृरीब नवाज् मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621

अजमेर ऋरीफ : 19/216 फुलाहे दारैन मस्जिद, नाला बाजार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फोन : 0145-2629385

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुगुल पुरा, हैदरआबाद फोन : 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुडोल कोम्पलेश, A.J. मुडोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीव के पास, हुब्ली, कर्नाटक, फोन : 08363244860